04 - दृढ़ संकल्प से ही शराबबंदी संभव

05 - विदेशी विधि फर्मों को भारत में प्रैक्टिस की अनुमति

06 - घर-घर गीता, जन-जन गीता' के संकल्प के साथ गीता जयंती...

07 - मोहन यादव आज करेंगे अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव का शुभारंभ

A Daily News Magazine

भोपाल

सोमवार, 01 दिसंबर, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 91, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

एक इतिहास की धारणा को बल, एक भूगोल का इंतजार

उमेश चतुर्वेदी

जुलाई 2001 के दूसरे हफ्ते में राजधानी दिल्ली और आगरा में बड़ी हलचल थी। वजह थी, पंद्रह जुलाई से शुरू हो रही परवेज मुशर्रफ की भारत यात्रा। तभी दिल्ली में सिंधी समाज ने मुशर्रफ की यात्रा के मद्देनजर एक कार्यक्रम रखा। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तत्कालीन उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने भरे मंच से पाकिस्तान को चेताया कि वह कश्मीर का सवाल उठाएगा तो भारत जवाबी रूप से सिंध के आत्मनिर्णय का सवाल उठाएगा।' इस वाकये का जिक्र इसलिए हो रहा है कि देश के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने ठीक चौबीस साल बाद सार्वजनिक मंच से कहा है कि भविष्य में सिंध भारत का हिस्सा हो सकता है। भारत की सीमाओं के बदलने की उम्मीद तो देश का एक तबका काफी अरसे से कर रहा है। लेकिन उसका ध्यान सिंध की बजाय बलूचिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर पर ज्यादा रहा है। सिंध का सवाल अपेक्षाकृत कम चर्चित और कम ज्ञातव्य रहा है। लेकिन यह बात चूंकि देश के रक्षा मंत्री ने कही है तो यह मामला गंभीर हो जाता है। हो सकता है कि यह राजनाथ सिंह का निजी विचार हो। लेकिन वे भारत की आधिकारिक शासक मोदी कैबिनेट के दूसरे नंबर के व्यक्ति हैं। इसलिए उनके शब्द कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाते हैं और उन शब्दों का प्रभाव राष्ट्रीय ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पड़ने स्वाभाविक है। सिंध के बंटवारे को यहां के हिंदू समाज ने ना तो व्यवहारिक माना, और ना ही उचित। आज यह पाकिस्तान का तीसरा बड़ा प्रांत है, जिसका क्षेत्रफल एक लाख 40 हजार 914 वर्ग किलोमीटर है। गुजरात के कच्छ का रण और राजस्थान का थार रेगिस्तान इसके पूर्व में स्थित है, जबकि दक्षिण में इसका पांव अरब सागर पखार रहा है। अरब सागर के ही किनारे स्थित कराची पाकिस्तान का आर्थिक केंद्र है, जैसे भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई है। भारत की सप्त पवित्र नदियों में से एक सिंधु इसी सिंध प्रांत से होकर गुजरती है। इस लिहाज से देखें तो भारत भूमि के लिए सिंध का महत्व समझ में आता है। लालकृष्ण आडवाणी भी सिंध के वासी रहे हैं। उन्होंने लिखा है कि उनकी पीढ़ी के सिंध के लोग भारत के विभाजन को स्वीकार नहीं कर पाए। राजनाथ सिंह ने अपने व्याख्यान में इस लेख का भी जिक्र किया है। आडवाणी अपने राजनीतिक उत्कर्ष के दिनों में सिंधु दर्शन यात्रा नाम से आयोजन करते रहे हैं। जिसका मकसद सिंधु के जरिए सिंध की माटी से बिछड़कर भारत आ गए लोगों को जोड़ना और उनकी स्मृतियों को जिंदा रखना रहा।

ब्रिटिश संसद द्वारा पारित कानून के तहत भारत विभाजन की योजना लार्ड माउंटबेटन ने बनाई। उन्होंने इसका जिम्मा कानून के जानकार सिरिल रेडक्लिफ को दिया। रेडक्लिफ को भूगोल और संस्कृति की जानकारी नहीं थी। विभाजन करते वक्त उन्होंने भारतीय वास्तविकताओं का ध्यान नहीं रखा। संस्कृतियों की भी समझ नहीं थी। इसका असर विभाजन पर भी दिखा। रेडक्लिफ रेखा एक तरह से उनकी मूर्खताओं का प्रतीक बन गई। उनकी संस्कृतिहीन सोच की वजह से भारत को विभाजन के वक्त भयानक विभीषिका को झेलना पड़ा। कई जगह पर विभाजन अगर कृत्रिम लगता है तो उसकी वजह रेडक्लिफ की संस्कृति, भूगोल और जमीनी हालात की नासमझी है।

इसी वजह से सिंध से भी भारत में विलय के लिए क्षीण ही सही, आवाजें उठती रहीं है। भारत से पाकिस्तान गए मुसलमानों को भी सम्मान नहीं मिला। उन्हें बिहारी और मुहाजिर कहा जाता रहा। एक दौर में सिंध में मुहाजिर कौमी मूवमेंट चलता रहा, जिसके प्रमुख अल्ताफ हुसैन रहे। हालांकि उनके आंदोलन का मकसद पाकिस्तान में भारत से गए उर्दू भाषी मुसलमानों के अधिकारों की रक्षा रहा। लेकिन पाकिस्तान सरकार उसे भारत समर्थक और विभाजनकारी मानती रही।

बाल्टिस्तान, बलूचिस्तान और पाकिस्तान के अधिकार वाले कश्मीर से तो भारत के साथ जुड़ने की मांग उठती रही है। हाल के दिनों में इस मांग ने तेजी पकड़ी है। वहां से आने वाले वीडियो में 'मोदी-मोदी' के नारे भी सुनाई देने लगे हैं। हालांकि सिंध प्रांत से ऐसी आवाजें कम उठती रहीं। यहां याद रखना चाहिए कि पाकिस्तान के एक प्रमुख राजनीतिक दल 'पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी' का सबसे ज्यादा असर सिंध प्रांत में ही है। जिसकी प्रमुख एक दौर में बेनजीर भुट्टो रही हैं। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी भुट्टो परिवार की जागीर मानी जाती है। इन संदर्भों में देखें तो राजनाथ सिंह के बयान इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि सिंध में विभाजन को लेकर मांग बढ़ रही है। पाकिस्तान की बदहाली, उर्दू भाषी मुसलमानों के साथ दोयम दर्जे के व्यवहार की वजह से सिंध प्रांत में रह से मुहाजिर लोगों में भी भारत के प्रति अनुराग बढ़ रहा है। बेशक भारत से सीधी जुड़ी रही पीढ़ी अब नहीं रही, लेकिन उसने अपना दर्द, अपने सुहाने सपने और गौरवशाली अतीत को नई पीढ़ी के साथ साझा किया है। नई पीढ़ी के पास सूचना तकनीक है, सूचना के तमाम साधन है। इसलिए वह देख पा रही है कि सीमा के उस पार की हालत कैसी है। उसके लिए भारत का नजारा दर्द और क्षोभ का कारण बन जाता है। क्योंकि आजादी के पहले संयुक्त भारत में सिंध की गिनती समृद्ध राज्यों में होती थी। सिंध कभी हिंदू बहुल राज्य था। कराची शहर हिंदू प्रधान था। पाकिस्तान की जनसंख्या में सिर्फ 2.17 फीसद हिंदू हैं। जो करीब 52 लाख हैं। इनमें से करीब 49 लाख सिंध में ही रहते हैं। 2023 की जनगणना से अनुसार सिंध की आबादी करीब 5.57 करोड़ है। इस लिहाज से देखें तो यहां की आबादी में हिंदुओं की हिस्सेदारी करीब 8.8 प्रतिशत है। ग्रामीण आबादी में करीब 13.3 प्रतिशत हिंदू हैं। ये लोग ज्यादातर सिंध के थारपारकर और उमरकोट जिले में रहते हैं। विभाजन से पहले सिंध के कई जिलों में हिंदुओं की आबादी करीब 90 फीसद थी। 1941 की जनगणना के अनुसार, कराची में ही हिंदुओं की बड़ी संख्या में हिंदू आबादी थी। इसके अलावा शिकारपुर, खैरपुर, लरकाना, सुक्कुर में भारी संख्या में हिंदू रहते थे। आज भी उमरकोट जिले में मुस्लिम समुदाय की तुलना में हिंदुओं की संख्या ज्यादा है। इसकी दूरी भारतीय सीमा से सिर्फ 60 किलोमीटर है। कह सकते हैं कि राजनाथ सिंह के बयान ने वहां के हिंदू समुदाय के लोगों की उम्मीदें जगा दी होंगी। इस बयान ने एक अतीत और इतिहास की धारणा को जिंदा तो कर दिया है, एक भूगोल की उम्मीदें भी जगा दी हैं। एक भूगोल कब हकीकत बन पाएगा, यह कहना फिलहाल मुश्किल है।

(प्रभासाक्षी डॉट कॉम पर प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

शरद की सुबह

गैर क्या जानिये क्यों
मुझको बुरा कहते हैं
आप कहते हैं जो ऐसा तो
बज़ा कहते हैं
वाकई तेरे इस अन्दाज को
क्या कहते हैं
ना वफ़ा कहते हैं जिस
को ना ज़फ़ा कहते हैं
हो जिन्हे शक, वो करें और
खुदाओं की तलाश
हम तो इन्सान को
दुनिया का खुदा कहते हैं
तेरी सूरत नजर आई
तेरी सूरत से अलग
हुस्न को अहल-ए-नजर
हुस्न नुमां कहते हैं
शिकवा-ए-हिज्र करें
भी तो करें किस दिल से
हम खुद अपने को भी
अपने से जुदा कहते हैं
तेरी रूदाद-ए-सितम
का है बयान नामुमकिन
फायदा क्या है मगर
यूं जो जरा कहते हैं
लोग जो कुछ भी कहें
तेरी सितमकोशी को
हम तो इन बातों अच्छा
ना बुरा कहते हैं
औरों का तजुरबा जो
कुछ हो मगर हम तो फ़िराक
तल्खी-ए-ज़ीस्त को
जीने का मजा कहते हैं।

- फिराक गोरखपुरी

इंडोनेशिया, थाईलैंड और मलेशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया में बाढ़ और भूस्खलन का कहर

500 से ज्यादा लोगों की मौत, लाखों लोग प्रभावित

नईदिल्ली (एजेंसी)। दक्षिण-पूर्व एशिया में भारी बारिश और तूफान के चलते इंडोनेशिया, थाईलैंड और मलेशिया में बाढ़ और भूस्खलन से 500 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई है। सबसे ज्यादा नुकसान इंडोनेशिया में हुआ है, जहां सैकड़ों लोग लापता हैं। राहत और बचाव कार्य जारी है, पर कई इलाकों में पहुंचना मुश्किल हो रहा है। श्रीलंका में भी चक्रवात से भारी नुकसान हुआ है।

राहत कार्य जारी, लाखों लोग बेघर- दक्षिण-पूर्व एशिया के तीन देशों में भारी बारिश की वजह से आई बाढ़ और भूस्खलन से मरने वालों की संख्या 500 से ज्यादा हो गई है, जबकि लाखों बेघर लोगों के लिए राहत का काम वीकेंड में भी जारी रहा। मलक्का स्ट्रेट में आए एक अनोखे ट्रॉपिकल तूफान की वजह से इंडोनेशिया, मलेशिया और थाईलैंड में बड़े पैमाने पर तबाही हुई, जिससे एक हफ्ते तक भारी बारिश और तेज हवाएं चलीं। इंडोनेशिया में 336, थाईलैंड में 170 और मलेशिया में दो लोगों की मौत की खबर है।

4 लाख से ज्यादा लोग प्रभावित

दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में बचाव और राहत अधिकारी रविवार को भी बाढ़ प्रभावित कई इलाकों तक पहुंचने की कोशिश कर रहे थे, जबकि बाढ़ का पानी कम हो गया था और तीनों देशों में हजारों लोगों को निकाला गया था। आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, 4 लाख से ज्यादा लोग प्रभावित हुए हैं। दक्षिणी थाईलैंड में लगभग 3 लाख और पश्चिमी इंडोनेशिया में 1.1 लाख।

साइक्लोन दितवाह से तमिलनाडु में 3 लोगों की मौत

चेन्नई। साइक्लोन दितवाह के चलते बारिश से जुड़ी घटनाओं में तमिलनाडु में तीन लोगों की मौत हो गई। तूतीकोरिन और तंजावुर में रविवार को दीवार गिरने से दो लोगों की मौत हो गई। मयिलादुथुराई में करंट लगने से 20 साल के युवक की जान चली गई।राज्य सरकार में मंत्री के रामचंद्रन ने बताया कि तटीय इलाकों में 234 झोपड़ियों/कच्चे घरों को नुकसान पहुंचा है। इसके अलावा 149 जानवरों की मौत हो गई है। खेती के काम वाली करीब 57,000 हेक्टेयर जमीन पानी में डूब चुकी है।

149 जानवरों की जान गई, 234 कच्चे घर टूटे, 57,000 हेक्टेयर खेती की जमीन डूबी

श्रीलंका में तबाही मचाने के बाद साइक्लोन दितवाह रविवार शाम को तमिलनाडु और पुडुचेरी के तटों से टकराएगा। मौसम विभाग ने कुड्डालोर, नागपट्टिनम, मयिलादुथुराई, विल्लुपुरम, चेंगलपट्टू समेत कई इलाकों में तेज हवाओं के साथ भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है।एनडीआरएफ और एसडीआरएफ समेत 28 से ज्यादा डिजास्टर रिस्पॉन्स टीमों को तैनात किया गया है। इनके अलावा महाराष्ट्र और गुजरात के एनडीआरएफ बेस से 10 टीमें चेन्नई पहुंची हैं। तमिलनाडु में भारी बारिश के कारण शनिवार को 54 उड़ानें रद्द कर दी गईं।

आईएमडी डायरेक्टर जनरल बोले- साइक्लोन तट के करीब पहुंचा

भारतीय मौसम विभाग के डायरेक्टर जनरल मृत्युंजय महापात्रा ने कहा, साइक्लोन दितवाह अभी तमिलनाडु और पुडुचेरी के तट के पास है। सुबह यह तट से लगभग 70 किमी दूर था। धीरे-धीरे उत्तर की ओर बढ़ रहा है। इसकी हवा की स्पीड अभी 70-80 किमी/घं के बीच है, जो कुछ इलाकों में 90 किमी/घं तक पहुंच सकती है।

डीजीपी-आईजी कॉन्फ्रेंस में जियो-पॉलिटिकल चैलेंजेस

महिला सुरक्षा के लिए देशभर में बने एक प्लेटफॉर्म: पीएम मोदी

रायपुर (एजेंसी)। आईआईएम नवा रायपुर में 60वें अखिल भारतीय डीजीपी-आईजी कॉन्फ्रेंस का समापन हो गया है। समापन समारोह में पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि महिलाओं के खिलाफ अपराध रोकने के लिए डायल 112 की तरह देशभर में एक प्लेटफॉर्म बनाया जाए।

कॉन्फ्रेंस खत्म होने के बाद प्रधानमंत्री मोदी स्कूली बच्चों से कॅरियर और परीक्षा को लेकर चर्चा की। इसके साथ ही पीएम मोदी ने नए स्पीकर हाउस एम-1 में पीएम केंद्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय और सरकारी स्कूलों के 30 छात्र-छात्राओं से मुलाकात की। इसके पहले सुबह उन राज्यों को प्रेजेंटेशन देने का मौका मिला, जो कल अपनी रिपोर्ट पेश नहीं कर पाए थे। पहले सत्र में पुलिसिंग में एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के उपयोग पर चर्चा की गई। दूसरे सत्र गाइडलाइन तैयार करने की प्रक्रिया पर फोकस रहा।

इन सब विषयों पर भी हुई चर्चा

- **स्मार्ट पुलिसिंग-** राज्यों में पुलिस को स्मार्ट करने के लिए क्या किया गया।
- **निगेटिव मीडिया रिपोर्टिंग-** निगेटिव रिपोर्टिंग को रोकने के लिए क्या प्रयास किया गया।
- **सोशल मीडिया मॉनिटरिंग-** सोशल मीडिया मॉनिटरिंग के लिए राज्यों में क्या सिस्टम है।
- **पुलिस वेलफेयर-** पुलिस वेलफेयर के लिए क्या-क्या किया है।
- **साइबर फ्रॉड-** साइबर फ्रॉड में कार्रवाई के साथ जागरूकता के लिए क्या किया गया।
- **आईजी-एसपी कॉन्फ्रेंस-** सभी राज्यों को डीजीपी कॉन्फ्रेंस की तरह आईजी-एसपी कॉन्फ्रेंस करने का निर्देश दिया गया।
- **आंतरिक सुरक्षा के लिए एक्शन प्लान-** आंतरिक सुरक्षा को लेकर किस तरह का एक्शन प्लान है।

मप्र विधानसभा का सत्र आज से

नपाध्यक्षों का काम ठीक नहीं तो जनता ही हटा सकेगी, विस सत्र में पेश होंगे दो विधेयक, कामगारों- दुकानदारों को मिलेगा साप्ताहिक अवकाश

भोपाल (नप्र)। एमपी विधानसभा के 1 दिसंबर से शुरू हो रहे शीतकालीन सत्र से पहले विपक्ष के खासतौर पर कांग्रेस के विधायकों ने विधानसभा सचिवालय की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए हैं। इन विधायकों का आरोप है कि विधानसभा में पूछने के लिए वो जो सवाल लगाते हैं उसे सचिवालय के कर्मचारी संबंधित विभागों के अधिकारियों के साथ मिलीभगत कर बदल रहे हैं।

सरकार नगर पालिका और नगर परिषद अध्यक्ष के चुनाव में बड़ा बदलाव करने जा रही है। अब तक पार्षद अध्यक्ष चुनते थे, लेकिन संशोधन के बाद अध्यक्ष को जनता सीधे चुनेगी।

इसके साथ ही, राइट टू रिकॉल की व्यवस्था भी लागू होगी। यानी जनता यदि अध्यक्ष के काम से नाखुश हों तो वोट देकर उन्हें हटा भी सकेगी। यह व्यवस्था निकाय कार्यप्रणाली को अधिक जवाबदेह और पारदर्शी बनाएगी।

मध्यप्रदेश सरकार ने व्यापार और दुकानों से जुड़े महत्वपूर्ण बदलावों को मंजूरी दी है। पिछले हफ्ते हुई कैबिनेट की बैठक में दुकान एवं स्थापना (द्वितीय संशोधन) विधेयक 2025 को स्वीकृति दी गई थी। अब रजिस्ट्रेशन की पूरी प्रक्रिया पूरी तरह डिजिटल होगी। साथ ही, दुकान एवं प्रतिष्ठान अधिनियम में संशोधन के तहत दुकानदारों और कामगारों को सप्ताह में एक दिन अनिवार्य अवकाश देना जरूरी होगा।

सोमवार एक दिसंबर से शुरु होने वाले विधानसभा के शीतकालीन सत्र में दोनों प्रस्ताव पारित होने के बाद पूरे प्रदेश में लागू हो जाएंगे।

रजिस्ट्रेशन अब केवल ऑनलाइन पोर्टल से- सरकार ने दुकान एवं स्थापना अधिनियम 1958 को आधुनिक जरूरतों के अनुरूप डिजिटल रूप में बदल दिया है। अब सभी दुकानों, प्रतिष्ठानों, होटलों, रेस्टोरेंटों और व्यवसायिक इकाइयों का रजिस्ट्रेशन केवल ऑनलाइन पोर्टल से होगा।

नई व्यवस्था के अनुसार

20 से कम कर्मचारियों वाले प्रतिष्ठानों में बिना श्रम आयुक्त की अनुमति के निरीक्षण नहीं हो सकेगा।

इससे सूक्ष्म और लघु व्यापारियों को अनावश्यक कार्रवाई और दबाव से राहत मिलेगी।

सभी प्रक्रियाएं पोर्टल पर: रिन्युअल, संशोधन, बंद होने की सूचना भी डिजिटल

अब श्रम विभाग से जुड़ी सभी प्रक्रियाएं पोर्टल पर होंगी-

रजिस्ट्रेशन
संशोधन
रिन्युअल
दुकान/प्रतिष्ठान बंद करने की सूचना

प्रतिष्ठान बंद होने पर 10 दिन के भीतर पोर्टल पर सूचना देना अनिवार्य होगा।

12 राज्यों में वोटर वेरिफिकेशन 11 दिसंबर तक चलेगा

एसआईआर की डेडलाइन 7 दिन और बढ़ाई गई

नई दिल्ली (एजेंसी)। चुनाव आयोग ने 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में चल रहे स्पेशल इंटेंसिव रिविजन (एसआईआर) की समय सीमा एक सप्ताह बढ़ा दी है। आयोग ने कहा कि अब अंतिम मतदाता सूची 14 फरवरी 2026 को प्रकाशित की जाएगी। मतदाता जोड़ने-हटाने का एन्यूमरेशन पीरियड यानी वोटर वेरिफिकेशन अब 11 दिसंबर तक चलेगा, जो पहले 4 दिसंबर तक तय था। वहीं, पहले ड्राफ्ट लिस्ट 9 दिसंबर को जारी होनी थी, लेकिन अब इसे 16 दिसंबर को जारी किया जाएगा। दरअसल बिहार के बाद देश के 12 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में एसआईआर 28 अक्टूबर से शुरू हुआ है। इस प्रोसेस में वोटर लिस्ट का अपडेशन होगा। नए वोटरों के नाम जोड़े जाएंगे और वोटर लिस्ट में सामने आने वाली गलतियों को सुधारा जाएगा।

99.53 प्रतिशत फॉर्म लोगों तक पहुंचे- चुनाव आयोग ने अपनी प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि 51 करोड़ मतदाताओं के लिए बनाए गए गणना फॉर्म में से 99.53 प्रतिशत फॉर्म लोगों तक पहुंचा दिए गए हैं।

टीकमगढ़ में दबंगों ने जमीनी विवाद पर किया खूनी खेल

तीन सगे भाइयों की दिन दहाड़े कुल्हाडी से काटकर मर्डर, महिलाएं घायल

टीकमगढ़ (नप्र)। टीकमगढ़ जिले में सिमार गांव में जमीनी विवाद के कारण खूनी संघर्ष हो गया। जिले के सिमरा गांव में जमीनी विवाद के चलते खूनी संघर्ष तीन भाइयों की हत्या कर दी गई है। जबकि तीन महिलाएं गंभीर रूप से घायल हैं। घायलों को इलाज के लिए जिला चिकित्सालय में भर्ती किया गया है। हादसे की जानकारी मिलते ही पुलिस की टीम मौके पर पहुंच गई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। इस हत्याकांड के बाद पूरे गांव में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात कर दिया गया है।

घायलों का इलाज जारी- दरअसल, सिमरा गांव में रविवार की दोपहर में जमीनी विवाद को लेकर खूनी संघर्ष हो गया। जिसमें तीन सगे भाई चतुर्भुज लोधी,बलराम लोधी,और परमलाल लोधी की कुल्हाड़ी डंडों से हत्या कर दी गई है। जबकि मृतक के परिवार की मुन्नी देवी, रेखा लोधी और 8 साल की बेटी स्नेहा गंभीर रुप से घायल हैं। घायलों को इलाज के लिए टीकमगढ़ जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया गया है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 27 °c
न्यूनतम 23°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार, 01 दिसंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संसद का शीतकालीन सत्र आज से

- विंटर सेशन में ठंडे दिमाग से काम की उम्मीद: रिजिजू
- एसआईआर पर कहा- मैं ईसी का प्रवक्ता नहीं, सर्वदलीय बैठक हुई

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद का शीतकालीन सत्र 1 दिसंबर से 19 दिसंबर तक चलेगा। 19 दिन में पूरे सत्र के दौरान 15 बैठकें होंगी। सत्र से पहले सर्वदलीय बैठक की गई।1 दिसंबर से शुरू हो रहे संसद के शीतकालीन सत्र से पहले रविवार को सर्वदलीय बैठक बुलाई गई। इस मीटिंग में विपक्ष के सभी सीनियर लीडर शामिल हुए।

पार्लियामेंट्री अफेयर्स मिनिस्टर किरेन रिजिजू ने कहा- हम विपक्षी पार्टियों की बात सुनेंगे। यह विंटर सेशन है, हम उम्मीद करते हैं कि सब लोग ठंडे दिमाग से काम करेंगे और गरमागरम बहस से बचेंगे। एसआईआर मुद्दे पर रिजिजू ने कहा- मैं यह नहीं कह सकता कि हम चर्चा के लिए कौन से मुद्दे लाएंगे। इलेक्शन कमीशन अपना काम करता है। मैं इलेक्शन कमीशन का स्पोक्सपर्सन नहीं हूं।

अहम बिल जो पेश होंगे

- न्यूक्लियर सेक्टर के लिए बड़ा बदलाव
- हॉयर एजुकेशन कमीशन बनाने वाला बिल भी तैयार
- हाईवे भूमि अधिग्रहण तेज होगा
- कंपनी कानून और एलएलपी कानून में बदलाव
- सभी बाजार कानून एक बिल में
- संविधान में संसोधन से जुड़ा बिल
- कंपनियों के खिलाफ विवाद का जल्द निपटारा।

तमिलनाडु के शिवगंगा में टूरिस्ट बसों की टक्कर, 10 की मौत और 20 घायल

नई दिल्ली (एजेंसी)। तमिलनाडु के शिवगंगा जिले में दो टूरिस्ट बसें आपस में टकरा गई हैं। इस हादसे में 10 लोगों की मौत हो गई है, जबकि 20 लोग घायल हो गए। पुलिस ने बताया कि रविवार को तमिलनाडु के शिवगंगा जिले में दो सरकारी बसों की आमने-सामने टक्कर में कम से कम दस लोगों की मौत हो गई और 20 लोग घायल हो गए। यह दुर्घटना पिल्लैयारपट्टी से लगभग पांच किलोमीटर दूर तिरुपत्तूर इलाके में हुई। मौके पर मौजूद एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि कम से कम 10 लोग मारे गए और 20 यात्री घायल हो गए और बताया कि आम लोगों और साथ में सफर करने वालों की मदद से कई लोगों को बाहर निकाला गया।

'लाल आतंक' को फिर बड़ी चोट

- छत्तीसगढ़ में 37 नक्सलियों ने किया सरेंडर, माओवादियों पर था 65 लाख रुपये का इनाम

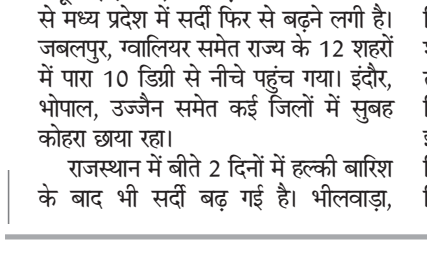

जगदलपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले में 37 नक्सलियों ने सरेंडर किया है। मिनपा जैसी घटना में शामिल नक्सली ने अपने 36 साथियों के साथ आत्मसमर्पण किया है। इस समर्पण के साथ ही एक और टीम बिखरती हुई नजर आ रही है, इन सभी नक्सलियों के ऊपर 65 लाख का इनाम घोषित था। दंतेवाड़ा पुलिस अधीक्षक गौरव राय ने बताया कि पूना मारगेम जिसका अर्थ पुनर्वास से पुनर्जीवन पहल पर भरोसा जताते हुए नक्सली हिंसा का मार्ग छोड़कर शांति और प्रगति के मार्ग को अपना रहे हैं और समाज की मुख्यधारा में शामिल हो रहे है।

सामाजिक सरोकार, समरसता और सादगी की मिसाल बना उज्जैन का सामूहिक विवाह समारोह

- मुख्यमंत्री ने सामाजिक समरसता का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया: राज्यपाल
- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अपने सुपुत्र का पाणिग्रहण संस्कार सामूहिक विवाह समारोह में कर मिसाल प्रस्तुत की

मुख्यमंत्री डॉ. यादव के आमंत्रण पर सामूहिक विवाह समारोह में शामिल होने उज्जैन पहुंचे कई विशिष्ट अतिथि

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सामाजिक सरोकार, समरसता और सादगी की मिसाल प्रस्तुत करते हुए अपने छोटे पुत्र का पाणिग्रहण संस्कार उज्जैन में हुए सामूहिक विवाह समारोह में संपन्न कराया। योग गुरू स्वामी रामदेव ने 21 जोड़ों के सामूहिक विवाह संस्कार कार्यक्रम का संचालन किया। स्वामी रामदेव ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव पहले मुख्यमंत्री हैं जिन्होंने ऐसी मिसाल प्रस्तुत की है। देश के प्रभावशाली, राजनीतिक और धनी व्यक्तियों के लिए यह एक अनुकरणीय पहल है। विवाह की इस प्रक्रिया के अनुसरण से शादियों में होने वाले अपव्यय को रोका जा सकेगा और मध्य तथा निम्न-मध्यम वर्गीय परिवारों को प्रेरणा मिलेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का यह भाव सबका साथ-सबका विकास की भावना के अनुरूप है।

उज्जैन में रविवार को सामूहिक विवाह समारोह में मुख्यमंत्री डॉ. यादव के पुत्र चिरंजीव डॉ. अभिमन्यु का डॉ. इशिता के साथ विवाह यादगार बन गया। एक ही पंडाल में मुख्यमंत्री डॉ. यादव के पुत्र के साथ जन-सामान्य के पुत्र-पुत्रियों के विवाह ने अद्भुत आत्मीयता और समानता के भाव का संचार किया। इस अवसर पर राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने समस्त नव-दंपतियों को बधाई दी। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सामाजिक समरसता का

श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उज्जैन में सामूहिक विवाह स्थल पर पधारे अतिथियों का स्वागत किया। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कहा कि प्रदेश में सनातन की परंपरा के अनुसार विवाह के कार्यक्रम हो रहे हैं। सामूहिक विवाह समारोह में समाज के सभी वर्गों के नव-दंपति सम्मिलित हैं। अनुसूचित जाति-जनजाति वर्ग के वर-वधू भी शामिल हैं।

सामूहिक विवाह समारोह में पधारे पं. धीरेंद्र शास्त्री महाराज ने कहा कि ऐसे सामूहिक एवं कम खर्च वाले विवाह समारोहों को प्रोत्साहन मिलना चाहिए। समाज का हर वर्ग इस प्रकार की व्यवस्था को स्वीकार करते हुए आगे बढ़े। वर्तमान समय में देश को नवाचारी ढंग से सोचने की आवश्यकता है। पं. शास्त्री ने कहा कि इस विवाह समारोह के माध्यम से श्रीमद्भगवद्गीता का संदेश जीवंत हो रहा है। सामूहिक विवाह समारोह में भेदभाव से परे सामाजिक समरसता का दृश्य नजर आ रहा था।

सामूहिक विवाह कार्यक्रम में अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद मनसा देवी ट्रस्ट हरिद्वार के अध्यक्ष एवं महंत श्री रवींद्र पुरी महाराज और जूना अखाड़ा के मुख्य संरक्षक और अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के महामंत्री पूज्य स्वामी हरि गिरि महाराज की ओर से सभी नव दंपतियों को एक-एक लाख रुपये की राशि देने की घोषणा की गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के पुत्र डॉ. अभिमन्यु और पुत्रवधु डॉ. इशिता सहित सभी नव दंपतियों ने संतों का आशीर्वाद प्राप्त किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की भावना के अनुरूप भोजन व्यवस्था सामूहिक विवाह समारोह की भावना के अनुरूप रही। सामूहिक विवाह सम्मेलन समिति के आयोजकों ने सभी अतिथियों का आत्मीय स्वागत किया। स्थानीय पुलिस, प्रशासन और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम को व्यवस्थित रूप से संचालित करने में सहयोग दिया।

कार्यक्रम में कर्नाटक के राज्यपाल श्री थावरचंद गहलोत, केंद्रीय संचार और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, केंद्रीय राज्य मंत्री जनजातीय मामले श्री दुर्गादास उईके, विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेंद्र सिंह तोमर, अन्य मंत्रीगण, विधायक और बड़ी संख्या में स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया और उनके मंगलमय वैवाहिक जीवन की कामना की।

'हमारा प्यार जिंदा...'

परिवार ने दूसरी जाति की वजह से प्रेमी को मार डाला, प्रेमिका ने शव के साथ रचाई शादी

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र के नांदेड़ में हैरान करने वाला मामला सामने आया है, यहां दूसरी जाति की लड़की से प्रेम करने की वजह से एक 20 साल के युवक को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। लड़की के पिता और भाईयों ने पहले तो लड़के को पीटा गया फिर उसे गोली मारी और उसका सिर पत्थर से कुचल दिया। लड़के की मौत के बाद उसके अंतिम संस्कार में, उसकी गर्लफ्रेंड ने अपने माथे पर सिंदूर लगाया और उसके घर में बहू बनकर रहने की कसम खाई।

परिवार ने बनाया रिश्ता खत्म करने का दवाब

(प्रेमिका) अपने भाइयों के जरिए सक्षम टेटे से मिली और उसके घर अक्सर आने-जाने से वे और करीब आ गईं। उनके तीन साल पुराने रिश्ते पर हाल ही में उसके परिवार का दबाव पड़ने लगा, जिन्होंने उनकी जाति में अंतर होने की वजह से उनके रिश्ते का विरोध किया। कई धमकियों के बावजूद आंचल ने टेटे के साथ अपना रिश्ता जारी रखा।

परिजनों ने प्रेमी की हत्या कर दी

जब युवती के भाइयों और पिता को पता चला कि वह टेट से शादी करने वाली है, तो उन्होंने गुरुवार को उसे पीटा, उसके सिर में गोली मार दी और पत्थर से उसका सिर कुचल दिया।

बॉयफ्रेंड के शरीर से कर ली शादी - जब सक्षम टेटे का अंतिम संस्कार हो रहा था, आंचल उसके घर पहुंची। उसने सक्षम के शरीर पर हल्दी लगाई, माथे पर सिंदूर लगाया और अपने मरे हुए बॉयफ्रेंड के शरीर से शादी कर ली।

सक्षम की मौत में भी हमारा प्यार जीत गया- आंचल

उसने टेट के हत्यारों के लिए मौत की सजा की मांग करते हुए कहा, सक्षम की मौत में भी हमारा प्यार जीत गया और मेरे पिता और भाई हार गए। महिला ने जोर देकर कहा कि उसने उससे शादी इसलिए की क्योंकि भले ही टेट मर चुका है, लेकिन उनका प्यार अभी भी जिंदा है।पुलिस ने छह आरोपियों के खिलाफ अलग-अलग धाराओं के तहत केस दर्ज करके उन्हें गिरफ्तार कर लिया है।

मोबाइल में एक्टिव सिम से ही चलेंगे वॉट्सएप-टेलीग्राम-स्नैपचैट

- सिम हटाई तो एप बंद, कम्प्यूटर पर भी हर 6 घंटे में लॉगआउट,

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने मैसेजिंग प्लेटफॉर्म्स को लेकर नया आदेश जारी किया है। वॉट्सएप, टेलीग्राम, सिग्नल,

स्नैपचैट, शेयरचैट, जियोचैट, अराटाई और जोश जैसे मैसेजिंग प्लेटफॉर्म्स मोबाइल में एक्टिव सिम कार्ड के बिना नहीं चल पाएंगे। सरकार का दावा है कि इससे साइबर धोखेबाजों का पता लगाने में मदद मिलेगी। दूरसंचार विभाग के आदेश में कहा गया है कि मैसेजिंग प्लेटफॉर्म्स यह तय करें कि एप तभी चलेगा।

मन की बात का 128वां एपिसोड में पीएम मोदी ने कहा

नए साल की खरीदारी में वोकल फॉर लोकल अपनाएं, कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी मिलना शानदार

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात के 128वें एपिसोड में रविवार को भारत में खेलों की प्रगति, विंटर टूरिज्म, वोकल फॉर लोकल के साथ ही वाराणसी में होने वाले काशी-तमिल संगमम का जिक्र किया।

पीएम ने कहा कि भारतीय खेलों के लिए यह महीना शानदार रहा। शुरुआत महिला टीम की आईसीसी महिला वर्ल्ड कप जीत से हुई। भारत को कॉमनवेल्थ खेलों की मेजबानी का भी ऐलान हुआ। टोक्यो में हुए डेफ ओलिंपिक्स में भारत ने रिकॉर्ड 20 मेडल जीते। महिला कबड्डी टीम ने वर्ल्ड कप जीतकर इतिहास रचा और बॉक्सिंग कप में भी भारत ने 20 मेडल हासिल किए। पीएम मोदी ने बताया कि 26 नवंबर को 'संविधान दिवस' पर सेंट्रल हॉल में विशेष कार्यक्रम का आयोजन हुआ। वंदेमातरम् के 150 वर्ष होने पर पूरे देश में होने वाले कार्यक्रमों की शानदार शुरुआत हुई 7 25 नवंबर को अयोध्या में राम मंदिर पर धर्मध्वजा का आरोहण हुआ 7 इसी दिन कुरुक्षेत्र के ज्योतिसर में पांचजन्य स्मारक का लोकार्पण हुआ।

मन की बात की 5 बड़ी बातें...

● वोकल फॉर लोकल अपनाने की अपील ● नौसेना तेजी से आत्मनिर्भर बन रही ● उत्तराखंड में विंटर टूरिज्म बढ़ रहा ● स्थानीय उपाद अपनाने की अपील ● वाराणसी में चौथा काशी-तमिल संगमम

उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल ने आज उज्जैन पहुंचकर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को उनके सुपुत्र चि. अभिमन्यु के सामूहिक विवाहोत्सव में संपन्न हुए मंगल विवाह की हार्दिक बधाई और शुभकमाए दीं।

नेशनल हेराल्ड केस- सोनिया और राहुल पर नई एफआईआर

- दिल्ली पुलिस ने ईडी की शिकायत पर दर्ज की

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) ने नेशनल हेराल्ड केस में सोनिया गांधी और राहुल गांधी के खिलाफ नई एफआईआर दर्ज की है। इसमें उनके अलावा छह अन्य लोगों और तीन कंपनियों के नाम शामिल हैं। ये तीन कंपनियां हैं- एजेएल , डोटेक्स मर्चेंडाइज और यंग इंडियन। इन सभी पर एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड (एजेएल) को धोखाधड़ी से हासिल करने का आरोप है।

सीएम योगी ने गोरखपुर में सुनीं करीब 200 लोगों की समस्याएं

बोले- घबराइए मत, हर समस्या का होगा समाधान

गोरखपुर (एजेंसी)। गोरखपुर प्रवास के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लगातार दूसरे दिन, रविवार सुबह जनता दर्शन कार्यक्रम में लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं। उन्होंने समस्या लेकर आए लोगों से आत्मीयता से संवाद करते हुए कहा, 'घबराइए मत, हर समस्या का समाधान सुनिश्चित कराएंगे। हर पीड़ित की शिकायत का प्रभावी निस्तारण कराया जाएगा।' जनता दर्शन में मुख्यमंत्री ने पास में मौजूद अधिकारियों को निर्देशित किया कि हर पीड़ित व्यक्ति की समस्या पर संवेदनशीलता से ध्यान दें और उसका समयबद्ध, गुणवत्तापूर्ण व पारदर्शी निस्तारण कराएं। इससे पहले शनिवार को भी सीएम ने जनता दर्शन में लोगों की समस्याएं सुनी थीं।

200 लोगों की सुनीं समस्याएं- रविवार सुबह गोरखनाथ मंदिर परिसर के महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन सभागार में आयोजित जनता दर्शन के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने करीब 200 लोगों की समस्याएं सुनीं और अधिकारियों को उनका समाधान करने के निर्देश दिए।

माफिया का कब्जा बर्दाश्त नहीं किया जाएगा- जनता दर्शन में कुछ लोगों द्वारा जमीन कब्जाने की शिकायत पर सीएम योगी ने कठोर कानूनी कार्रवाई के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि किसी भी गरीब की जमीन पर यदि कोई कब्जा करने की कोशिश करे तो उसे ठीक से सबक सिखाया जाए। गरीब की जमीनों पर दबंग या माफिया का कब्जा बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

मुरादाबाद में भीषण सड़क हादसा,एक ही परिवार के छह लोगों की मौत, छह घायल

मुरादाबाद (एजेंसी)। दिल्ली-लखनऊ नेशनल हाईवे पर ऑटो में सवार होकर शादी में जा रहे एक ही परिवार के 12 लोगों को मेरठ डिपो की रोडवेज बस ने रौंद दिया। हादसे में मौके पर ही पांच लोगों की मौत हो गई। जबकि एक ने अस्पताल में पहुंचकर दम तोड़ दिया। छह लोग गंभीर रूप से घायल हैं।

राजस्थान में शीतलहर का अलर्ट

मप्र के 12 शहरों में पारा 10 डिग्री से नीचे

केदारनाथ में तापमान -14डिग्री,हिमाचल में 4 दिसंबर से बर्फबारी की संभावना

नईदिल्ली/भोपाल/जयपुर/शिमला/देहरादून (एजेंसी)। पहाड़ी राज्यों में बर्फबारी से मध्य प्रदेश में सर्दी फिर से बढ़ने लगी है। जबलपुर, ग्वालियर समेत राज्य के 12 शहरों में पारा 10 डिग्री से नीचे पहुंच गया। इंदौर, भोपाल, उज्जैन समेत कई जिलों में सुबह कोहरा छाया रहा।

राजस्थान में बीते 2 दिनों में हल्की बारिश के बाद भी सर्दी बढ़ गई है। भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, राजसमंद समेत 5 जिलों में रविवार सुबह घना कोहरा छाया रहा। 1 दिसंबर से राज्य में शीतलहर का अलर्ट है। शेखावाटी और बीकानेर संभाग में न्यूनतम तापमान 2 डिग्री तक जाने के आसार हैं। हिमाचल लंबे समय से बारिश-बर्फबारी का इंतजार कर रहे पर्यटकों और स्थानीय लोगों के लिए अच्छी खबर है। मौसम विभाग ने 4 दिसंबर से प्रदेश के ऊपरी और मध्यम पहाड़ी क्षेत्रों में हल्की बारिश और बर्फबारी का अनुमान जताया है।

हिमाचल प्रदेश में इस महीने अभी तक 93 प्रतिशत कम बारिश हुई है जिससे सूखे जैसे हालात बनना शुरू हो गए हैं। वहीं, उत्तराखंड में बादल छाए रहे। पहाड़ी इलाकों का पाला गिर रहा है। केदारनाथ में तापमान माइनस 14 डिग्री और बद्रीनाथ में माइनस 10 डिग्री तक पहुंच गया।

मध्य प्रदेश: 14 शहरों में तापमान 10 डिग्री से नीचे भोपाल में 6 दिन बाद फिर शीतलहर, पारा 8.6डिग्री

एमपी में सर्दी फिर से असर दिखाने लगी है। प्रदेश के 14 शहरों में रात का पारा 10 डिग्री से नीचे रहा। छतरपुर के नौगांव में 6.1 डिग्री और प्रदेश के इकलौते हिल स्टेशन पचमढ़ी में पारा 6.4 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया। भोपाल में पिछले 2 दिन से शीतलहर चल रही है, न्यूनतम पारा 8.6 डिग्री पहुंच गया।

उत्तराखंड में पहाड़ी इलाकों में पाला गिरा, हरिद्वार और ऊधम सिंह नगर में धुंध

उत्तराखंड के पहाड़ी इलाकों में पाला गिरा है, जिससे निचले इलाकों में सर्दी बढ़ गई है। केदारनाथ में तापमान माइनस 14डिग्री और बद्रीनाथ में माइनस 10डिग्री तक पहुंच गया है। शनिवार को हरिद्वार और ऊधम सिंह नगर में हल्की धुंध दिखी। राजधानी देहरादून का न्यूनतम तापमान 8.7 डिग्री रहा।

परिक्रमा

भाजपा में गुटबंदी दूर करने हेमंत का भोजन मंत्र

अरुण पटेल

लेखक
सुबह सवेरे के
प्रबंध संपादक हैं

जब कोई दल सत्ता में होता है तब उसमें गुटबंदी का होना कोई अस्वाभाविक बात नहीं है। हर कार्यकर्ता और नेता की यह स्वाभाविक इच्छा होती है कि उसे भी सत्ता साकेत में नौकायन का अवसर जरूर मिले। सागर में इन दिनों भाजपा की अंदरूनी कलह काफी बढ़ी हुई है और पूर्व मंत्री विधायक भूपेंद्र सिंह और मंत्री गोविंद सिंह राजपूत की दूरी किसी से छिपी नहीं है। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने अपने सागर प्रवास के दौरान भाजपा नेताओं के आपसी मतभेद दूर करने का न केवल प्रयास किया बल्कि फौरी तौर पर एकता स्थापित करने के लिए भोजन मंत्र का सहारा लिया, जिसे दूसरे शब्दों में डिनर डिप्लोमेसी भी कह सकते हैं।

फौरी तौर पर तो ऐसा लगता है कि दोनों एक होने का दावा कर रहे हैं लेकिन इस दावे में कितना दम है यह कुछ समय बाद ही पता चलेगा। चिर-परिचित प्रतिद्वंद्वी गोविंद सिंह राजपूत जो कि मोहन यादव सरकार में मंत्री हैं और पूर्व मंत्री विधायक भूपेंद्र सिंह एकसाथ नजर आये और दोनों नेता खंडेलवाल की उपस्थिति में एकसाथ नजर आये। बैठकों के बाद राजपूत के निवास पर भूपेंद्र सिंह पहुंचे और प्रदेश अध्यक्ष के साथ राजूपत के निवास पर पहुंचे। इस मेल मुलाकात की पृष्ठभूमि एक दिन पूर्व ही तैयार हो गई थी।

यह समझा जाता है कि सागर के भाजपा कार्यालय में सांसदों और विधायकों एवं भाजपा जिला अध्यक्षों की बैठक में प्रदेश अध्यक्ष खंडेलवाल ने दो टूक शब्दों में गुटबाजी रोकने की समझाइश दी और आपसी मतभेदों को मिटाने के बारे में सख्त हिदायत दी। खंडेलवाल का जोर इस बात पर था कि भाजपा में संगठन ही सबकुछ है और समाज में यह संदेश नहीं जाना चाहिए कि भाजपा में गुटबाजी चल रही है। खंडेलवाल का कहना है कि सागर जिले में उनका यह पहला प्रवास था और पार्टी में गुटबाजी नहीं है, सब ठीक चल रहा है। यह खंडेलवाल की फौरी मध्यस्थता का ही प्रभाव कहा जा सकता है कि गोविंद सिंह राजपूत और भूपेंद्र सिंह ने एक-दूसरे के यहां भोजन किया। जहां तक सागर की राजनीति का सवाल है वहां पर राजपूत और भूपेंद्र सिंह एक साल बाद साथ-साथ दिखे। यहां तक कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के कार्यक्रम में दोनों नेता एक-दूसरे के साथ नजर नहीं आते थे। ऐसा लगता है कि हेमंत खंडेलवाल का भोजन मंत्र आखिर काम आ गया। भूपेंद्र सिंह और गोविंद सिंह राजपूत की राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता लगभग 27 साल पुरानी है। भूपेंद्र सिंह खांटी भाजपा नेता हैं जबकि गोविंद सिंह राजपूत ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ दल बदल कर भाजपा आये और वे कांग्रेस की कमलनाथ सरकार में मंत्री थे और अब भाजपा सरकार में भी मंत्री हैं। गोविंद सिंह राजपूत के भाजपा में आने के बाद और

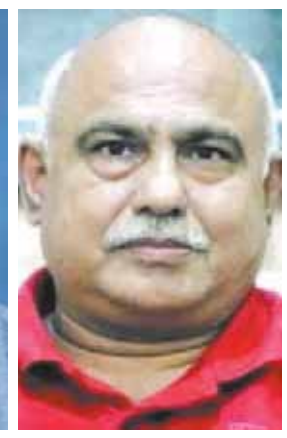

कैबिनेट मंत्री बनाये जाने के बाद से भूपेंद्र सिंह से उनकी बातचीत बंद थी और दोनों ही एक-दूसरे पर निशाना साधने का कोई अवसर हाथ से जाने नहीं देना चाहते थे। अब देखने वाली बात यही होगी कि दोनों के घाव काफी पुराने हैं, लेकिन यह एकता केवल दिखावटी रहेगी या वास्तव में दोनों एक रहेंगे।

मोहन यादव ने किये कांग्रेस पर तीखे हमले

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने नेहरू-गांधी परिवार को अपने निशाने पर लेते हुये कहा कि नेहरू और गांधी ने आजादी से पहले योगदान देने वाले लोगों के साथ अन्याय किया है और उनके योगदान को भुला दिया है। मोहन यादव का आरोप है कि यदि पं. जवाहरलाल नेहरू ने सरदार पटेल की बात मानी होती तो जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद 370 लागू करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती, और न ही इसका परिणाम देश और जनता को भुगतना पड़ता। जम्मू कश्मीर में 40 हजार से अधिक निरापराध लोगों को मारा गया है, सिर्फ एक खानदान को बचाने और उसके भरोसे अन्य महापुरुषों के साथ किया वह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। इंदौर में आयोजित नर्मदा प्रवाह यूनिटी मार्च में भाग लेते हुये यात्रा शुरू होने से पहले अपने संबोधन में नेहरू-गांधी परिवार को निशाने पर लिया। डॉ. यादव ने यहां तक कहा कि कागजों में अपने खानदान को भारत रत्न दिलवाया। पं. नेहरू, इंदिरा गांधी और राजीव गांधी को भारत रत्न मिला। न किसी के भुलाये कोई भूलता है और न किसी के मिटाये मिटता है।

कांग्रेसियों ने ली संविधान की शपथ

जहां एक ओर संविधान दिवस पर इंदौर में भारतीय जनता पार्टी ने एकता यात्रा निकाली तो वहीं दूसरी ओर कांग्रेस ने संविधान की शपथ ली। डॉ. भीमराव आंबेडकर की प्रतिमा पर सांसदद्वय दिग्विजय सिंह और विवेक तन्खा ने देश के लोकतांत्रिक ढांचे और चुनाव की पारदर्शिता पर तीखे सवाल उठाये। दिग्विजय सिंह का साफ शब्दों में कहना था कि देश का लोकतंत्र अभूतपूर्व संकट से गुजर रहा है। जिन लोगों के घर से करोड़ों रुपये मिले हैं वही चुनाव आयोग का बचाव कर रहे हैं जबकि आयोग पूरी तरह से बेईमानी पर उतर आया है। भाजपा सरकार मतदाताओं के अधिकार छीन रही है। दिग्विजय सिंह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सलाह दी कि लोकतांत्रिक संस्थाओं से छेड़छाड़ जैसी गतिविधियों से उन्हें अपने आप को अलग रखना चाहिये। भाजपा सरकार एसआईआर की प्रक्रिया के माध्यम से मतदाताओं के अधिकार छीन रही है। दिग्विजय सिंह ने कांग्रेसियों को लोकतंत्र की रक्षा की शपथ दिलाई।

और यह भी...

कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी ने प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी के द्वारा जिलों में संगठन मंत्री का पद देने पर ऐतराज जताते हुये कहा कि जब जिलों में संगठन मंत्री का पद ही नहीं है तो नियुक्तियां कैसी हुई, केवल महामंत्री की नियुक्ति ही की जा सकती है। कांग्रेस की पॉलिटिकल अफेयर्स कमेटी की बैठक में प्रदेश कांग्रेस द्वारा जिलों में की गई संगठन मंत्रियों की नियुक्तियों का मामला जब उठा तब हरीश चौधरी ने साफ कर दिया कि कांग्रेस के बाइलॉज में संगठन मंत्री का कोई पद ही नहीं है तो नियुक्ति कैसी कर दी। कांग्रेस में संगठन महामंत्री का पद है जिस पर प्रदेश व जिलों में नियुक्ति की जाये। उल्लेखनीय है कि प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने जिलों में संगठन मंत्री नियुक्त कर दिये थे जिन्हें हरीश चौधरी ने निरस्त कर दिया। उन्होंने पटवारी को यह भी जतला दिया कि नियुक्तियां करने से पहले अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी से स्वीकृति ली जाये और उसके ही नियुक्ति पत्र जारी किये जायें। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि यह सुनिश्चित किया जाये कि हर महीने कम से कम एक बैठक हो। बाद में जीतू पटवारी ने जो नियुक्तियां की थी उनका प्रस्ताव महामंत्री के रूप में दिया जिन्हें हरीश चौधरी ने तत्काल स्वीकृति दे दी और उनको महामंत्री के रूप में नियुक्ति पत्र जारी कर दिए ।

ब्रिटेन के फिन और विल ने बालाघाट में खेला चैरिटी-मैच

बहन की याद में दान किए हॉकी स्टिक-किट; स्टेडियम की प्रशंसा कर बोले- दोबारा आएंगे

बालाघाट (नप्र)। यूनाइटेड किंगडम (ब्रिटेन) से कान्हा राष्ट्रीय उद्यान घूमने आए विदेशी मेहमान फिन और विल ने रविवार को बालाघाट के हॉकी मैदान में खिलाड़ियों के साथ एक चैरिटी मैच खेला। यह चैरिटी मैच उनकी बहन राचेल की स्मृति में आयोजित किया गया था, जिनकी ब्रेन ट्यूमर से मौत हो गई थी। फिन और विल अपनी बहन की याद में लोगों को जागरूक करने और दान करने के

लिए यात्रा कर रहे हैं। बालाघाट के एस्ट्रोटर्फ हॉकी मैदान में फिन ने लड़कों की टीम के साथ और विल ने लड़कियों की टीम के साथ मैच खेला। इस दौरान विदेशी मेहमानों ने खिलाड़ियों को हॉकी स्टिक और स्पोर्ट्स किट भी दान की।

फिन और विल ने दोबारा यहां आने की इच्छा जताई

मैदान पर पहुंचे फिन और विल का हॉकी मध्यप्रदेश के उपाध्यक्ष विजय वर्मा, नेहरू स्पोर्टिंग क्लब के वरिष्ठ खिलाड़ी राजकुमार शांडिल्य, रमेश ऊके, सुशील वर्मा, राधेलाल दवने और गगन वर्मा ने स्वागत किया। नेहरू स्पोर्टिंग क्लब और जिले के हॉकी खिलाड़ियों ने राचेल के निधन पर मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

विल ने बालाघाट के हॉकी स्टेडियम और खिलाड़ियों की सराहना की, साथ ही दोबारा यहां आने की इच्छा जताई। उन्होंने बताया कि बालाघाट में हॉकी का अच्छा मैदान है और उन्हें हॉकी से विशेष लगाव है। उन्होंने यह भी बताया कि वे लंदन में अपनी बहन की स्मृति में हो रहे चैरिटी हॉकी मैच में शामिल नहीं हो सके, इसलिए उन्होंने बालाघाट में यह मैच खेलने का फैसला किया।

उन्होंने भारत को मोहब्बत वाला देश बताया और कान्हा में वन्यजीवों को देखने के अनुभव को अद्भुत बताया। विल ने कहा कि मौका मिलने पर वे दोबारा यहां आना चाहेंगे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देशवासियों से की 'मन की बात'

राज्यपाल श्री पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने टीवी पर देखा और सुना कार्यक्रम

भोपाल (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को आकाशवाणी के माध्यम से मन की बात कार्यक्रम में देशवासियों को संबोधित किया। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उज्जैन में सामूहिक विवाह सम्मेलन कार्यक्रम स्थल पर टेलीविजन पर प्रधानमंत्री श्री मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम को देखा और सुना।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने मन की बात कार्यक्रम में विशेष रूप से संविधान दिवस पर विशेष कार्यक्रम, वंदेमातरम् के 150 वर्ष होने पर पूरे देश में होने वाले कार्यक्रमों, अयोध्या में श्रीराम मंदिर पर धर्मध्वजा का आरोहण, हैदराबाद में दुनिया की सबसे बड़ी लीप इंजन एमआरओ फेसिलिटी का उद्घाटन, भारतीय नौसेना की उपलब्धियों, कृषि क्षेत्र में देश की बड़ी उपलब्धियों, कॉमनवेल्थ खेलों की मेजबानी, इसरो की अनोखी ड्रोन प्रतियोगिता, चंद्रयान-3 की सफलता, रामबन सुलाई हनी को जीआई टैग, भारत के हनी प्रोडक्शन में नये रिकार्ड, हरियाणा के कुरूक्षेत्र में महाभारत अनुभव केन्द्र, यूरोप के लातविया में यादगार गीता महोत्सव, गुजरात के नवानगर के जाम साहब महाराजा दिग्विजय सिंह के

महान कार्य, नेच्युरल फार्मिंग,दक्षिण भारत में नेच्युरल फार्मिंग, काशी तमिल संगम, आईएनएस 'माहे' को भारतीय नौसेना में शामिल करना, नौसेना से जुड़े टूरिज्म, सर्दियों से जुड़े टूरिज्म, विंटर टूरिज्म, विंटर गेम्स, वैड इन इंडिया अभियान, भगवान बुद्ध के पावन अवशेषों को लेकर दुनियाभर के लोगों में गहरा जुड़ाव, वोकल फॉर लोकल, भारतीय महिला टीम की आईसीसी महिला विश्व कप में जीत, टोकियो में डीफ-ओलिंपिक में भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन, महिला खिलाड़ियों की कबड्डी वर्ल्ड कप में जीत, वर्ल्ड बॉक्सिंग कप फाइनल्स में भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन, महिला टीम की ब्लाइंड क्रिकेट वर्ल्ड कप में जीत, इन्ड्योरेंस स्पोर्टस की नई खेल संस्कृति और 'फिट इंडिया संडेस ऑन साइकिल' आदि का उल्लेख किया।

इस अवसर पर केंद्रीय संचार और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, केंद्रीय राज्य मंत्री जनजातीय मामले श्री दुर्गादास उईके, प्रदेश के जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद् के उपाध्यक्ष श्री मोहन नागर एवं अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

श्रीलंका में 2 दिन साइक्लोन में फंसा ओरछा का बिजनेसमैन

पत्नी के साथ कार में गुजारी रात, कहा- हर सांस आखिरी-सी लग रही थी

निवाड़ी (नप्र)। श्रीलंका में तबाही मचाने के बाद साइक्लोन दितवाह के असर से भारत के तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और पुडुचेरी के तटीय इलाकों में भारी बारिश हो रही है। अब तक तमिलनाडु से तीन लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है।

शनिवार तक श्रीलंका में दितवाह के कारण बाढ़ और लैंडस्लाइड से 123 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी। 130 से ज्यादा लापता हैं। चेन्नई की फ्लाइट्स कैंसल होने के कारण कोलंबो एयरपोर्ट पर लगभग 300 भारतीय यात्री तीन दिन से फंसे हुए हैं। इनमें से एक ग्रीस प्रेमानी भी हैं। उनका मध्य प्रदेश के ओरछा में प्रॉपर्टी का बिजनेस हैं। वे झांसी में रहते हैं। ग्रीस प्रेमानी कहते हैं कि दो दिन के सफर के बाद काफी थकावट सी महसूस हो रही थी, लेकिन उन्हें शादी की रस्मों में शामिल होने के लिए एयरपोर्ट से करीब 35 किलोमीटर दूर कोलंबो कैंडी पहुंचना था। बारिश हो रही थी। राजधानी में कई जगह पेड़ गिरने के चलते ट्रैफिक जाम जैसे हालात थे। हमे शहर से पांच किलोमीटर बाहर आने में ही डेढ़ से दो घंटे लग गए। कैंडी वही जगह है, जहां साइक्लोन दितवाह के चलते भारी बारिश हो रही थी और बाढ़ आई हुई थी।

कोलंबो से कैंडी सिटी पहुंचने के लिए पहाड़ी रास्ता पार करना होता है। भारी बारिश के बीच हमारी कार जैसे ही पहाड़ से उतर रही थी, लैंड स्लाइड होने लगी। ड्राइवर ने हम लोगों से कार से बाहर निकलने कहा। हम बारिश के बीच कार से निकल बाहर खड़े हो गए। पहाड़ धंस कर रोड तक आ रहे थे। सिरहन सी होने लगी। इससे पहले इस तरह के नजारे के तो मैंने सिर्फ वीडियो ही देखे थे। थोड़ी देर बाद पहाड़ सरकना बंद हो गए। वहां हमारे जैसे करीब 35-40 लोग और रहे होंगे। वे सब श्रीलंका के ही थे।

भोपाल में मौलाना मदनी के पुतले को जूते मारकर जलाया

बजरंग दल-वीएचपी ने की कार्रवाई की मांग; कहा था- जब-जब जुल्म होगा जिहाद भी होगा

भोपाल (नप्र)। जमीयत उलेमा-ए-हिंद के प्रमुख मौलाना महमूद मदनी के 'जब-जब जुल्म होगा, तब-तब जिहाद होगा' वाले बयान को लेकर विरोध तेज हो गया है। विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल ने रविवार को भोपाल के रोशनपुरा चौराहे पर विरोध प्रदर्शन किया।

प्रदर्शनकारियों ने मदनी के पुतले पर जूते-चप्पलों की माला पहनाई और उस पर जूते भी फेंके। इसके बाद पुतला फूंका। संगठनों ने इसे देश और हिंदू समाज के खिलाफ दिया गया बयान बताते हुए कानूनी कार्रवाई की मांग की है।

मदनी ने कहा था- जब-जब जुल्म होगा जिहाद भी होगा- भोपाल में जमीयत उलेमा-ए-हिंद की गवर्निंग बॉडी की बैठक में शनिवार को मौलाना महमूद मदनी ने कहा था कि मौजूदा दौर में इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ नफरत फैलाने की कोशिशें बढ़ गई हैं। जिहाद जैसे मुकद्दस शब्द को आतंक और हिंसा से जोड़ना जानबूझकर किया जा रहा है।

उन्होंने कहा- लव जिहाद, लैंड जिहाद, थूक जिहाद जैसे शब्द मुसलमानों को बदनाम करने के लिए गढ़े गए हैं। इस्लाम में जिहाद का मतलब अन्याय और जुल्म के खिलाफ संघर्ष है। जब-जब जुल्म होगा, तब-तब जिहाद होगा।

वीएचपी ने पूछा- मदनी बताएं कि कहां जुल्म हो रहा है

बजरंग दल का कहना है कि मौलाना मदनी ने वंदे मातरम, देश और हिंदू धर्म के खिलाफ बयान दिए हैं। वीएचपी के प्रांत सह मंत्री जितेंद्र चौहान ने कहा कि मौलाना मदनी के बयान के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जिहाद जब तक चलेगा...जुल्म होगा, तो बताएं कि कहां जुल्म हो रहा है। उन्होंने कहा, आजादी से पहले देश का बंटवारा हुआ, मुसलमानों ने पाकिस्तान मांगा दे दिया गया, अब उन्हें कौन सा पाकिस्तान चाहिए। लगातार वंदे मातरम, सुप्रीम कोर्ट का विरोध कर ये लोग मुस्लिम युवाओं को बहकाकर जिहाद और गृह युद्ध की तैयारी कर रहे हैं।

वीएचपी ने कहा- राष्ट्रीय स्वाभिमान को आहत किया

विश्व हिंदू परिषद के राष्ट्रीय प्रवक्ता विनोद बंसल ने कहा कि मदनी जैसे लोग मुस्लिम युवाओं को 'जुल्म, जन्नत और जिहाद' जैसे नारों के नाम पर भटकाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ कट्टरपंथी तत्व देश की न्याय व्यवस्था और राष्ट्रीय स्वाभिमान को आहत करने की कोशिश कर रहे हैं। बंसल ने कहा कि मुस्लिम समाज को भी समय रहते ऐसे कट्टरपंथी तत्वों से दूरी बनानी होगी। उनका आरोप है कि हलाल के नाम पर अवैध कमाई कर आतंकी गतिविधियों को बढ़ावा देने की कोशिश की जाती है, लेकिन अब ऐसा संभव नहीं होगा।

आईएएस संतोष वर्मा के खिलाफ ब्राह्मणों का कफन बांधकर प्रदर्शन

परशुराम मंदिर से अजाक्स दफ्तर तक निकाल रहे थे रैली, पुलिस ने बैरिकेडिंग कर रोका

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में आईएएस अधिकारी संतोष वर्मा द्वारा ब्राह्मण समाज की बेटियों को लेकर दिए गए कथित बयान ने प्रदेशभर में आक्रोश पैदा कर दिया है। रविवार को राजधानी भोपाल में सैकड़ों की संख्या में ब्राह्मण समाज के लोगों ने कफन बांधकर प्रदर्शन किया और एजेएकेएस कार्यालय (अजाक्स भवन) का घेराव करने निकले। परशुराम मंदिर से रैली निकालते हुए कार्यकर्ताओं ने 'संतोष वर्मा मुर्दाबाद', 'ब्राह्मण समाज जिंदाबाद' जैसे नारे लगाए और अधिकारी के खिलाफ एफआईआर तथा निलंबन की मांग की।

संतोष वर्मा को सरकार बर्खास्त करे- बीजेपी नेता कैलाश मिश्रा ने कहा- हम परशुराम मंदिर से अजाक्स ऑफिस तक जाने वाले थे लेकिन पुलिस प्रशासन ने हमें रोक लिया है। हम यहां ज्ञापन दे रहे हैं। फर्जी आईएएस संतोष वर्मा ने जिस तरह से

ब्राह्मण वर्ग की बेटियों के लिए जिन शब्दों का उपयोग किया है हम उनकी निंदा करते हैं।

कैलाश मिश्रा ने कहा- हम राज्य सरकार से मांग करते हैं कि ऐसे फर्जी आईएएस को सरकार बर्खास्त करे। इनका आचरण पहले भी अच्छा नहीं रहा है। इन्होंने महिलाओं पर पहले भी अपशब्दों का प्रयोग किया है। संतोष वर्मा ने पहले भी जेल की हवा खाई है। ऐसे व्यक्ति को पद पर रहने का अधिकार नहीं हैं जो जेल में रहकर आया हो। सर्वसमाज ब्राह्मण समाज एक सुर से मांग करते हैं कि उन्हें नौकरी से बर्खास्त किया जाए और उनके ऊपर कानूनी कार्रवाई की जाए।

कफन बांधकर निकले हैं लड़ाई जारी रखेंगे

ब्राह्मण रेजिमेंट के अध्यक्ष पंडित रामनारायण अवस्थी ने कहा- ब्राह्मण रेजिमेंट के आवाहन पर कई संगठनों के लोग यहां उपस्थित हुए हैं। सभी संगठनों की एक ही मांग है। जब तक संतोष वर्मा पर एफआईआर, निष्कासन की कार्रवाई नहीं हो जाती तब तक पूरी समाज संघर्ष करती रहेगी। आज हमने संकेत दिया है हम सिर पर कफन बांधकर निकल गए हैं। यहां लड़ाई जहां तक जाएगी हम लड़ने के लिए तैयार हैं।

3 दिन में कार्रवाई करे, वर्ना सीएम हाउस-विधानसभा घेरेंगे

रामनारायण अवस्थी ने कहा- हमें मोहन सरकार पर पूरा विश्वास है लेकिन यदि समय-सीमा में काम होता है तो हम सरकार के साथ हैं। नहीं तो हम पूरे मप्र के ब्राह्मण संगठनों और हिन्दू संगठनों के साथ भोपाल में मार्च करेंगे, सीएम हाउस, विधानसभा घेराव करेंगे। जब तक हमें न्याय नहीं मिलता तब तक ब्राह्मण समाज डटा रहेगा। ब्राह्मण समाज अनुशासन हीनता नहीं करना चाहता। इसलिए शांत बैठा है। शासन प्रशासन तीन दिन में इस पर कार्रवाई करें नहीं तो उग्र आंदोलन होगा। सीएम हाउस और विधानसभा घेराव भी करेंगे। एसीपी उमेश तिवारी ने बताया- ब्राह्मण समाज के एक मोर्चा द्वारा परशुराम मंदिर से मार्च करते हुए सैंट मैरी स्कूल के सामने ज्ञापन दिए गए हैं।

संपादकीय

जीडीपी वृद्धि बढ़ी, परंतु...!

अमेरिका द्वारा भारत पर तगड़ा टैरिफ आयद किए जाने के बाद भी अगर देश की जीडीपी दूसरी तिमाही (वित्तीय वर्ष 2025-26) में वृद्धि दर 8.2 प्रतिशत रही है तो यह महत्वपूर्ण उपलब्धि है। हालांकि इन आंकड़ों की अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों की ओर से पुष्टि अभी बाकी है। सरकार की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक यह विगत छह तिमाहियों का उच्चतम स्तर है। पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि की तिमाही में यह 5.6 प्रतिशत थी। इसके पीछे कारण जीएसटी दर में कटौती से उपभोग बढ़ने की उम्मीद में कारखानों द्वारा किया गया अधिक उत्पादन बताया गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इन आंकड़ों पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इसे लोगों की कड़ी मेहनत और उद्यमशीलता का परिणाम बताया है। इसी प्रकार विनिर्माण, जो देश के सकल घरेलू उत्पाद का 14 प्रतिशत है, दूसरी तिमाही में 9.1 प्रतिशत बढ़ा, जबकि पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में यह 2.2 प्रतिशत था। इन आंकड़ों से उत्साहित देश के मुख्य आर्थिक सलाहकार (सीईए) वी. अनंत नागेश्वरन ने विश्वास जताया कि चालू वित्त वर्ष में भारत की आर्थिक विकास दर 7 प्रतिशत के आंकड़े को पार कर जाएगी और भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार 4 ट्रिलियन डॉलर के ऐतिहासिक स्तर को छू लेगा। कृषि क्षेत्र का प्रदर्शन भी अनुकूल संकेत दे रहा है। नागेश्वरन ने कहा कि मुख्य महंगाई स्थिर बनी हुई है। गौरतलब है कि संसद में इस साल जनवरी में पेश किए गए आर्थिक सर्वेक्षण में वित्त वर्ष 2026 के लिए वास्तविक आर्थिक विकास दर 6.3 से 6.8 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया गया था। हालांकि, दूसरी तिमाही के आंकड़ों ने इन अनुमानों को पीछे छोड़ दिया है। उन्होंने कहा कि मंदी या गिरावट की आशंकाओं को खारिज करते हुए, हम कम से कम 7 प्रतिशत की वृद्धि देख रहे हैं। दूसरी तरफ चिंता की बात यह है कि देश में राजकोषीय घाटा लगातार बढ़ रहा है। अप्रैल से अक्टूबर के बीच यानी इस वित्तीय वर्ष के पहले सात महीनों में भारत का राजकोषीय घाटा 8.25 लाख करोड़ रुपये रहा। यह वार्षिक अनुमानों का 52.6 प्रतिशत है। अखिल भारतीय औद्योगिक राजकोषीय घाटा पिछले वर्ष के 46.5 प्रतिशत से अधिक है। सरकार का लक्ष्य इस वित्तीय वर्ष में राजकोषीय घाटे को जीडीपी के 4.4 प्रतिशत तक कम करना है, यह एक साल पहले 4.8 प्रतिशत था। इसी प्रकार हमारा व्यापार घाटा भी लगातार बढ़ रहा है। भारत का व्यापार घाटा अक्टूबर 2025 में बढ़कर $41.7 बिलियन के रिकॉर्ड स्तर पर पहुँच गया, जो पिछले साल के $26.2 बिलियन से अधिक है। इस वृद्धि का मुख्य कारण सोने के आयात में भारी उछाल रहा, जो लगभग तीन गुना बढ़कर $14.7 बिलियन हो गया है। अमेरिका द्वारा लगाए गए टैरिफ ने भारतीय निर्यात को प्रभावित किया है, खासकर अमेरिका से होने वाले निर्यात में कमी आई है। अलबत्ता सेवा निर्यात क्षेत्र मजबूत रहा है। उधर डॉलर के मुकाबले रूपया और लुढ़कता जा रहा है और कभी भी 90 रू. प्रति डॉलर तक पहुंच सकता है। इन जमीनी सच्चाई के समानांतर सरकारी आकड़ों की खुशफहमी कितनी सच है, यह तो आगे चलकर साफ होगा। जहां तक भारत सरकार के आंकड़ों की प्रामाणिकता की बात है तो विगत एक दशक में उनकी अंतरराष्ट्रीय विश्वसनीयता बहुत कम हो चुकी है। अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष (आईएमएफ) ने अपनी रिपोर्ट में भारत के 'नेशनल अकाउंट्स डाटा को 'सी' ग्रेड दिया है। यही नहीं आईएमएफ ने भारत की आर्थिक गणना का आधार वर्ष 2011-12 मानने पर भी सवाल उठाते हुए इसे 'आउट डेटेड' कहा है। जाहिर है कि जीडीपी वृद्धि दर में यह बढ़ोतरी तभी प्रामाणिक मानी जाएगी, जब अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां इसका अनुमोदन करें। तब मोदी सरकार इसे राजनीतिक रूप से भुना ही सकती है।

दृढ़ संकल्प से ही शराबबंदी संभव

नजरिया

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी चिंतक हैं।

जस्टिस काटजू से लेकर विशिष्ट कहे जाने वाले वकीलों और सज्जनों ने शराबबंदी को अव्यवहारिक बताकर उसका विरोध किया था, परंतु श्री नीतीश कुमार बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने हर आलोचना को सहा और उसका उत्तर दिया पर अपने निर्णय पर अडिग रहे। हमारे देश के तथागत वामपंथी प्रगतिशील धर्मनिरपेक्षता का दावा करने वाली जमातें जो उस समय श्री नीतीश कुमार को गांधी का दूसरा अवतरण बता रही थीं, उन्हें अगला प्रधानमंत्री बता रही थीं, हालांकि वे भी बाद में उनके खिलाफ हो गई। शायद इसलिए कि उस समय कांग्रेस श्री नीतीश कुमार के पक्ष में थी और अब नहीं। दुनिया की आर्थिक शक्तियों के द्वारा संचालित होने वाला धर्मनिरपेक्षता का अभियान का स्वर भी बदल गया था, क्योंकि श्री नीतीश कुमार राजनीतिक पाला बदलकर एनडीए के समर्थन से मुख्यमंत्री बन गए थे और उसके बाद से शराबबंदी जैसा महत्वपूर्ण कदम अचर्चित हो गया। जब समर्थक ही आलोचक बन गये तो स्वाभाविक था कि वे तारीफ कैसे करते और तारीफ करते तो राजनीतिक नुकसान होता और शायद वैश्विक फंडिंग भी बंद हो जाती।

बिहार चुनाव 14 नवंबर को पूरा हो गया, इस चुनाव में देश और दुनिया के अनेकों मुद्दे चर्चित रहे, कौन सा समूह कितने रुपए बांटेगा, कौन क्या देगा, पर शराबबंदी पर कोई चर्चा नहीं हुई। जिस प्रदेश की सरकार ने और विशेष मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने शराबबंदी का साहसिक निर्णय दिया था, जिसको लेकर बिहार के हाईकोर्ट से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक में बहस हुई थी।

जस्टिस काटजू से लेकर विशिष्ट कहे जाने वाले वकीलों और सज्जनों ने शराबबंदी को अव्यवहारिक बताकर उसका विरोध किया था, परंतु श्री नीतीश कुमार बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने हर आलोचना को सहा और उसका उत्तर दिया पर अपने निर्णय पर अडिग रहे। हमारे देश के तथागत वामपंथी प्रगतिशील धर्मनिरपेक्षता का दावा करने वाली जमातें जो उस समय श्री नीतीश कुमार को गांधी का दूसरा अवतरण बता रही थीं, उन्हें अगला प्रधानमंत्री बता रही थीं, हालांकि वे भी बाद में उनके खिलाफ हो गई। शायद इसलिए कि उस समय कांग्रेस श्री नीतीश कुमार के पक्ष में थी और अब नहीं। दुनिया की आर्थिक शक्तियों के द्वारा संचालित होने वाला धर्मनिरपेक्षता का अभियान का स्वर भी बदल गया था, क्योंकि श्री नीतीश कुमार राजनीतिक पाला बदलकर एनडीए के समर्थन से मुख्यमंत्री बन गए थे और उसके बाद से शराबबंदी जैसा महत्वपूर्ण कदम अचर्चित हो गया। जब समर्थक ही आलोचक बन गये तो स्वाभाविक था कि वे तारीफ कैसे करते और तारीफ करते तो राजनीतिक नुकसान होता और शायद वैश्विक फंडिंग भी बंद हो जाती।

इस चुनाव के बीच 2 नवंबर को मध्य प्रदेश के संस्कृति मंत्री ने एक बयान दिया कि बिहार में शराबबंदी लागू है और माफिया घर-घर शराब पहुंचा रहे हैं। मुझे नहीं पता की संस्कृति मंत्री एनडीए के पक्ष में हैं या खिलाफ, परंतु उनके बयान से बिहार में एनडीए के खिलाफ एक मुद्दा जरूर लोगों को दे दिया था कि अब एनडीए के मंत्री मान रहे है कि माफिया घर-घर शराब पहुंचा रहे हैं, तो शराबबंदी कैसी? और एनडीए की सरकार शराब माफिया से मिली हुई है। हालांकि इसके बावजूद भी यह मुद्दा कोई चुनाव के लिए बड़ा सवाल नहीं बन सका।

मैं संपूर्ण शराबबंदी के पक्ष में हूं और मानता हूं कि महात्मा गांधी की यह इच्छा और निर्देश था कि शराबबंदी होना चाहिए। जब मैं शराबबंदी की बात रहा हूं तो सारे नशे की बात कह रहा हूं। समाज में हर प्रकार के नशे की बंदी होना चाहिए। नशा न केवल एक व्यक्ति के जीवन को बर्बाद करता है बल्कि समूचे समाज परिवार को उजाड़ता है। गरीब व्यक्ति जब नशा करते हैं तो वह अपना ही घर बर्बाद करते हैं, नशे की गिरफ्त में आकर कर्ज लेते हैं, जमीन मकान संपत्ति बेच देते हैं, बच्चों और बीवी के साथ मारपीट, गाली गलौज करते हैं, उन्हें भी नशा करना सिखाते हैं और अपने वोट को भी नशे के लिए बेच देते हैं। आज स्थिति यह हो रही है कि गांव-गांव में शराब माफिया और शराब के फुटकर विक्रेताओं की जमात खड़ी हो गई है, गांव के गरीब बेरोजगार बच्चों को नशे के दुकानदार और माफिया मोटर साइकिल दे रहे हैं, वह गांव-गांव में जाकर नशा बेचते हैं, जरूरत होती है तो उधार भी दे देते हैं बाद में मारपीट कर वसूल करते हैं, जमीन गिरवी रखवा लेते हैं इससे गांव के गांव कर्जदार बन गए, नशा करने वाले माफियाओं के बंधक बन गए, यह माफिया राजनैतिक दलों और नेताओं को भारी चंदा देते हैं, गाड़ी घोड़ा की व्यवस्था करवा देते हैं और अप्रत्यक्ष रूप से राजनीति के नियंत्रक बन जाते हैं। नशे का सबसे ज्यादा प्रभाव घरों की महिलाओं पर पड़ता है, उन्हें कितना अपमान, मारपीट सहना होती है इसकी कल्पना करना भी कठिन है।

मैं जिस पार्टी (लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी) का नेतृत्व करता हूँ जैसे चंद वैचारिक दलों को छोड़ दें अन्यथाः लगभग सभी सत्ताधारी और मुख्य विपक्षी दलों की राजनीति के दिये नशा माफियाओं के चंदे के तेल से जलते हैं। अक्सर सरकार और राजनीति दल यह तर्क देते हैं कि शराब और नशा राजस्व का बड़ा माध्यम है परंतु यह सत्य नहीं है। महात्मा गांधी कहते थे कि शराब अनैतिक है और सरकारों को अनैतिक व्यवसाय नहीं करना चाहिए। क्या सरकार अपने राजस्व के नाम पर वेश्यावृत्ति को भी धंधा मान लेगी और अपने आय के नाम पर चकला घर चलाऐगी?

नशे की गिरफ्त इतनी बढ़ गई है कि बच्चे, छात्र और बेटियां भी इसके प्रभाव में आ चुकी हैं स्कूलों के बच्चों के लिए 10-15 रूपये की कीमत वाले शराब के श्बच्चे पाउच्च बनाए गए और बेचे जा रहे हैं जो स्कूलों के आसपास दुकानों, होटलों पर आसानी से उपलब्ध हैं। छोटे-छोटे बच्चे घर में माता-पिता से एवं बाहर के वातावरण से नशा करना सीख रहे हैं। नगरों और शहरों में भी बेटियां प्रगतिशीलता के नाम पर शराब, सिगरेट, गांजे का सात्विक प्रयोग करने लगी और सारी वर्जनाएं टूट रही हैं। सार्वजनिक पार्कों में बच्चे नशे की सिगरेट लेकर हर प्रकार के नशे करते पाये जाते हैं और सार्वजनिक स्थान सार्वजनिक अपराध के स्थान बन गए हैं। पुलिस और प्रशासन के लिए भी यह भ्रष्टाचार की आय के स्थाई निर्बाध और संस्थागत माध्यम बन गए।

एक पुलिस के थानेदार के पास उत्तर प्रदेश में 100 करोड़ की संपत्ति पाई जाती है, रतलाम में एक नशे के अपराधी को भगाने के लिए पुलिस 50 लाख की रिश्वत लेती है और समूचे देश में न जाने इस प्रकार की कितनी घटनाएं प्रतिदिन अखबारों में छपती हैं। राजनीतिक घात प्रतिघात का मुद्दा तो नशा बनता है। पंजाब में आम आदमी पार्टी ने उड़ता पंजाब यानी नशे में उड़ता पंजाब का मुद्दा बनाया और सरकार बना ली थी। भाजपा ने दिल्ली में आम आदमी पार्टी की शराब नीति का मुद्दा विधानसभा चुनाव में बनाया और सत्ता हथियाई। इसका मतलब साफहै कि आम जनमानस ने जहां कहीं भी नशाबंदी, शराबबंदी की घोषणा की गई उन्हें जन समर्थन दिया है। आंध्र प्रदेश में स्वर्गीय रामाराव, हरियाणा में स्व. चौधरी देवीलाल को शराबबंदी की घोषणा के बाद समाज और खासकर महिलाओं का भारी समर्थन मिला था। जो लोग शराब के समर्थन के लिए नकली शराब या जहरीली शराब का तर्क देते हैं वह झूठा तर्क देते हैं और नशे का बचाव करते हैं। 14-15 करोड़ की आबादी के बिहार में 100-50 लोग नकली या जहरीली शराब से मर जाते हैं तो यह कोई उल्लेखनीय घटना नहीं है। जहां दुर्घटनाओं में 80000 लोग रोज मर जाते हैं वहां 8-10 निर्दोष मर जाये, वहां 100-50 लोगों को नकली शराब से मौत हो भी जाए तो इसे घटना नहीं माना जा सकता।

यह दुखद है कि जहाँ दुनिया में शराब की खपत घट रही है वहीं भारत में इसकी खपत बढ़ रही है। ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका यूरोप और चीन के बाजारों में शराब निर्माता जैसी बड़ी कंपनियों के शेयर 75 प्रतिशत तक गिर गए हैं और शराब उद्योगों को 74 लाख करोड़ का घाटा हुआ है, यानी भारत के बजट से लगभग दुगना। जबकि भारत को गांधी का देश कहा जाता है। देश में पिछले लगभग बीस वर्षों में शराब की खपत लगभग तीन गुना बढ़ गई है। भारत का बाजार 4800 अरब यानी 5 लाख करोड़ रुपए का हो गया है और प्रमुख शराब निर्माता कंपनियों के दाम 14 गुना तक बढ़ गए हैं। वर्ष 2005 में प्रति व्यक्ति वार्षिक शराब की खपत 2.4 लीटर थी जो अब 6 लीटर से अधिक हो चुकी है। देसी ब्रांड शराब कंपनियों के शेयर 14 गुना तक बढ़ गए हैं, तिलक नगर इंडस्ट्रीज का 2021 में एक शेयर का दाम 34 रुपए 70 पैसे था जो अक्टूबर 25 में 528 रूपये का यानी 15 गुना, रेडको खेतान का शेयर जो 616 रुपए का था वह बढ़कर 3135 का हो गया है और इसी प्रकार अन्य शराब निर्माण कम्पनियों के दाम बढ़ गए।

मध्य प्रदेश तो शराब की बिक्री एवं पीने के मामले में शीर्ष पर है। जहां पिछले दो वर्षों में 86 प्रतिशत की वृद्धि शराब बिक्री में हुई है यानी 456 लाख लीटर की खपत हुई। राजस्थान में 29 प्रतिशत की वृद्धि हुई यानी 304 लाख लीटर की शराब पिलाई गई। जो लोग शराब से आय की बात करते हैं वह भूल जाते हैं कि शराब के मालिक विलासता में जीवन गुजारते हैं और बाद में बैंकों से करोड़ों रुपए लेकर भाग जाते हैं, विजय माल्या का उदाहरण आपके सामने है। जहां तक शराब आय का संबंध है तो समूचे देश में शराब से मात्र 19730 करोड़ रुपए का राजस्व मिलता है यानी भारत के कुल बजट का एक प्रतिशत भी नहीं, बल्कि 0.30 प्रतिशत, यानी एक प्रतिशत का एक बटा तीन ही मिलता है। इतने से बजट की आपूर्ति के लिए देश के मूल परिवार, समाज, राजनीति और व्यवस्था, भारत के आदि मूल्य, सत्य और ईमानदारी को नष्ट करना क्या देश को भीतर से नष्ट करना नहीं है।

मुझे खुशी होगी कि अगर केंद्र और राज्य सरकारें 30 जनवरी बापू के बलिदान दिवस पर यह निर्णय करें कि देश में संपूर्ण शराब बंदी लागू की जाये। सरकार दुनिया के कॉर्पोरेट को कॉरपोरेट टैक्स कम कर 5 लाख करोड़ का मुनाफा करा देती है। भारत के उद्योगपतियों का लाखों करोड़ों रुपए वसूलने की बजाय बट्टे खाते में डालकर माफ कर देती है तो क्या देश की आत्मा को बचाने के लिए 19000 करोड़ रुपए की तुच्छ रकम के लालच को नहीं छोड़ा जा सकता? संभव है बस संकल्प और दृढ़ता की आवश्यकता है।

अरावली की भूवैज्ञानिक पहचान और 100 मीटर कट ऑफ की पर्यावरणीय हानियाँ

वैज्ञानिक विश्लेषण

सुधीन्द्र मोहन शर्मा

लेखक भूवैज्ञानिक, पर्यावरण एवं जल प्रबंधन विशेषज्ञ हैं।

भारत की सबसे प्राचीन पर्वत श्रेणियों में से एक अरावली न केवल एक भूवैज्ञानिक विरासत है, बल्कि लाखों लोगों के जीवन, जल-स्रोतों, जलवायु और जैव-विविधता का आधार भी है। हाल के वर्षों में यह सुझाव दिया गया है कि अरावली को केवल वही भू-आकृति माना जाए जो स्थानीय प्राकृतिक सतह से कम-से-कम 100 मीटर ऊपर हो।

यह परिभाषा न केवल वैज्ञानिक रूप से गलत है, बल्कि अरावली के नाजुक पारिस्थितिक तंत्र को गंभीर क्षति पहुँचा सकती है, क्योंकि इस कट-ऑफ के नीचे आने वाले विशाल क्षेत्र को 'अरावली नहीं' मानकर खनन व निर्माण के लिए खुला छोड़ा जा सकता है।

अरावली की वास्तविक भूवैज्ञानिक परिभाषा

अरावली को वैज्ञानिक रूप से किसी विशिष्ट ऊँचाई से नहीं, बल्कि उसकी भू-संरचना (structure), शैल-रचना (lithology), आयु (age) और भू-आकृतिक (geomorphic) निरंतरता से पहचाना जाता है।

ओरोजेनिक बेल्ट (Orogenic Belt)

अरावली-दिल्ली फोल्ड बेल्ट पृथ्वी के प्रोटेरोज़ोइक युग (2500-540 मिलियन वर्ष पुराना) में बने पर्वत-निर्माण (orogeny) का परिणाम है।

इसकी मुख्य विशेषताएँ हैं-

फोल्डेड metamorphic rocks – गनीज़, शिस्ट, क्वार्टज़ाइट

Igneous intrusions

NE–SW संरचनात्मक अभिविन्यास

लंबी, परस्पर जुड़ी Ridges और Lineaments

इन भू-आकृतिक विशेषताओं का संबंध ऊँचाई से नहीं, बल्कि टेक्टोनिक इतिहास से है।

भू-आकृतिक निरंतरता (Geomorphic continuity)

अरावली अनेक स्थानों पर प्राकृतिक क्षरण (erosion) के कारण 50-120 मीटर की निम्न पहाड़ियों या कटक (ridges) के रूप में दिखती है।

इनका ढाल (slope), शैल-रचना और संरचनात्मक दिशा

उन्हें स्पष्ट रूप से अरावली प्रणाली का हिस्सा बनाती है, चाहे उनकी ऊँचाई 40 मीटर हो या 400 मीटर।

ऊँचाई-आधारित परिभाषा क्यों गलत है?

दुनिया के किसी भी ओरोजेनिक बेल्ट – जैसे स्कॉटलैंड की पहाड़ियाँ या प्रीकैम्ब्रियन शील्ड – को किसी न्यूनतम मीटर के आधार पर परिभाषित नहीं किया जाता।

भूविज्ञान का सिद्धांत स्पष्ट है-

पर्वत-श्रृंखला की पहचान उसकी उत्पत्ति और संरचना से होती है, न कि उसकी मौजूदा ऊँचाई से।

100 मीटर की नियामकीय कट-ऑफः एक वैज्ञानिक त्रुटि

100 मीटर का यह नियम भूवैज्ञानिक नहीं, बल्कि प्रशासनिक (regulatory) सुविधा के लिए बनाया गया प्रतीत होता है।

ऐसी सीमाएँ अक्सर मानचित्रण, क्षेत्र-निर्धारण नियम लागू करने की सुविधा के लिए बनाई जाती हैं।

लेकिन इनका उपयोग वैज्ञानिक परिभाषा के रूप में करना बेहद हानिकारक है।

समस्या यह है कि-

अरावली की सबसे नाजुक, सबसे क्षरण-रोधी, और सबसे पारिस्थितिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र – वही हैं जो 100 मीटर से नीचे स्थित हैं।

100 मीटर कट-ऑफ के पारिस्थितिक दुष्प्रभाव

पर्वत श्रृंखलाओं की फुट हिल्स सबसे संवेदनशील क्षेत्र होती हैं

यही क्षेत्र जल पुनर्भरण, वन्यजीव आवाजाही , धूल-तूफानों की रोकथाम, वर्षाजल निकासी और वनस्पति आवरण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

इन क्षेत्रों को 'अरावली नहीं' कहकर खनन या निर्माण के लिए खोल देना पूरे पारिस्थितिक तंत्र की रीढ़ तोड़ने जैसा है।

खनन और अतिक्रमण का सबसे अधिक दबाव 100 मीटर से नीचे ही होता है

फुट हिल्स : पहुँचने में आसान,आर्थिक रूप से लाभकारी, निर्माणकर्ताओं के लिए आकर्षक होती हैं।

यदि नीति कहे कि '100 मीटर से नीचे अरावली नहीं है', तो-

अनियंत्रित खनन बढ़ेगा

रियल एस्टेट विस्तार तेज़ होगा

हरे क्षेत्र और वन टुकड़ों में बँटेंगे

जलग्रहण क्षेत्र नष्ट होंगे

जैव-विविधता पर असर

अरावली में पाए जाने वाले-

तेंदुआ

नीलगाय

लोमड़ी

सियार

उड़न लोमड़ी

अनेक पक्षी प्रजातियाँ

मुख्यतः फुट हिल जोन्स में विचरण करती हैं, रहती हैं।

इन क्षेत्रों में अवैज्ञानिक ढील देने पर प्राकृतिक गलियारे समाप्त हो जाएंगे।

जलविज्ञान (Hydrology) का नुकसान

अरावली दिल्ली-एनसीआर, गुरुग्राम, फरीदाबाद और राजस्थान के बड़े भागों के लिए प्रमुख जल-संचयन और रिचार्ज प्रणाली है।

निम्न पहाड़ियों में निर्माण एवं खनन से-

रिचार्ज कम होगा

एक्वीफर्स सूखेंगे

सतही बहाव बढ़ेगा

बाढ़ जोखिम बढ़ेगा

मरुस्थलीकरण का खतरा बढ़ेगा

अरावली राजस्थान से हरियाणा होते हुए दिल्ली तक रेगिस्तान को आगे बढ़ने से रोकने वाली प्राकृतिक दीवार है।

निचले भाग नष्ट होने पर, पश्चिमी राजस्थान की रेतीली हवाएँ, धूल-तूफान और द्रोणी क्षेत्रों में रेतीली मिट्टी का संचय बढ़ जाएगा, जिसका असर दिल्ली-एनसीआर तक पहुँचेगा।

निष्कर्ष

अरावली की वैज्ञानिक परिभाषा उसकी भू-संरचना, शैल-रचना और ओरोजेनिक इतिहास से तय होती है—न कि उसकी ऊँचाई से। 100 मीटर जैसी कृत्रिम सीमा न केवल भूवैज्ञानिक रूप से गलत है, बल्कि पारिस्थितिक रूप से अत्यंत खतरनाक है।

इस नियम के कारणः

अरावली की सबसे नाजुक निम्न पहाड़ियाँ

प्रमुख वन्यजीव गलियारे

जल रिचार्ज क्षेत्र

हरियाली व प्राकृतिक अवरोध

सब खतरे में आ जाते हैं।

यदि निम्न क्षेत्रों को 'अरावली नहीं' मानकर खनन और निर्माण की छूट दी जाती है, तो यह अरावली, दिल्ली-एनसीआर, और उत्तर-पश्चिम भारत की पर्यावरणीय सुरक्षा को दीर्घकालिक नुकसान पहुँचा सकता है।

राजा महेन्द्र प्रताप सिंह- एएमयू के प्रथम छात्र

जयंती विशेष

एमडब्ल्यू अंसारी

पूर्व आईपीएस अधिकारी

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, उत्कृष्ट पत्रकार, क्रांतिकारी व्यक्तित्व, सामाजिक सुधारक और एक महान इंसान—दुनिया जिन्हें 'आर्यन पेशवा' के नाम से भी जानती है, जिनकी सेवाओं का सम्मान करते हुए भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया—वह महान शख़्सियत कोई और नहीं बल्कि अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के होनहार सपूत राजा महेन्द्र प्रताप सिंह हैं। आज उनके जन्मदिवस पर हम उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

राजा महेन्द्र प्रताप सिंह का जन्म 1 दिसम्बर 1886 को हुआ। वे 'आर्यन पेशवा' के नाम से प्रसिद्ध थे और भारत की अस्थायी सरकार (Provisional Government of India) के प्रधान थे। यह सरकार प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान भारत से बाहर स्थापित की गई थी। उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध के समय 1940 में जापान में 'एग्ज़ीक्यूटिव बोर्ड ऑफ इंडिया' की स्थापना भी की।

गौरतलब है कि राजा महेन्द्र प्रताप सिंह ने ए.एम.यू. में बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की, लेकिन कुछ कारणों से वे बी.ए. की परीक्षा में शामिल नहीं हो सके। वे देश को स्वतंत्र कराने के दृढ़ निश्चय के साथ विदेश गए थे। इससे पहले वे देहरादून से 'निर्बल सेवक' नामक अख़बार भी निकालते थे। जर्मनी के पक्ष में लिखे गए एक लेख के कारण उन पर 500 रुपये का जुर्माना लगाया गया, जिसे उन्होंने अदा तो कर दिया, लेकिन इससे उनके भीतर देश को आज़ाद कराने की इच्छा और मजबूत हो गई।

स्वाधीनता संग्राम में उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जब वे देश की मुक्ति की लड़ाई लड़ रहे थे, उन्हें विदेश जाने के लिए पासपोर्ट तक नहीं मिला। बाद में थॉमस कुक एंड सन्स के मालिक ने बिना पासपोर्ट के अपनी कंपनी के जहाज़ से उन्हें इंग्लैण्ड भेजा। इसके बाद उनकी मुलाकात जर्मनी के सम्राट कैज़र से हुई, जिन्होंने भारत की आज़ादी की लड़ाई में हर संभव सहायता देने का वादा किया। वहाँ से वे अफ़ग़ानिस्तान गए और वहाँ के बादशाह से मिले। प्रताप सिंह रूस गए और लेनिन से मिले, लेकिन वहाँ से कोई सहायता नहीं मिली। 1920 से 1946 तक वे विदेशों में सक्रिय रहे और वर्ल्ड फ्रेंडशिप एसोसिएशन की स्थापना की। इसके बाद वे 1946 में स्वदेश लौट आए। 29 अप्रैल 1979 को राजा महेन्द्र प्रताप सिंह का निधन हो गया।आज उनके जन्मदिवस पर हम उन्हें सलाम करते हुए उनकी कुर्बानियों को याद करते हैं। निस्संदेह वे और उनके साथी—विशेषकर मौलाना बरकतुल्लाह भोपाली, मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी आदि—सभी महान स्वतंत्रता सेनानी थे, जिनकी वजह से हम आज़ादी का सूरज देख पाए। हम राजा महेन्द्र प्रताप सिंह के साथ साथ उन सभी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।राजा महेन्द्र प्रताप सिंह, जिनका जन्म आज ही के दिन 1 दिसम्बर 1886 को हुआ था, ए.एम.यू. के प्रथम ग्रेजुएट छात्र के रूप में भी जाने जाते हैं। हम उन्हें सलाम करते हैं और समस्त अलीगढ़ बिरादरी से अपील करते हैं कि वे उन्हें याद करें। याद रखिए—सर सैयद के इन रखिए—सर सैयद के इन महान संरक्षकों की सेवाओं को अगर आने वाली पीढ़ियों तक सही ढंग से नहीं पहुँचाया गया, तो इतिहास हमें कभी माफ़ नहीं करेगा।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नेताजी के महाभोज का महाप्रबंध

व्यंग्य

डॉ. महेंद्र अग्रवाल

लेखक व्यंग्यकार हैं।

सब शहर के जाने-माने लोग थे और नेताजी की बेटी की शादी में आये थे। उनकी गणना शहर के चर्चित लोगों में थी और ये शादी भी शहर में चर्चा का विषय थी। लड़के के पिता बड़े उद्योगपति थे व नेताजी प्रदेश सरकार में काबीना मंत्री। एक ही लड़की थी। उम्मीद थी कि दामाद पिता की आर्थिक व ससुर की राजनीतिक विरासत दोनों संभालेगा। शादी के बजट की चर्चा लोकतंत्र होने से सर्वत्र फैली पसरी थी। करोड़ों का खर्च और करोड़ों का दहेज़ इसका आधार था।

वर और वधु पक्ष का भोजन एक जगह था। नेताजी के क्षेत्रीय मतदाता भी बड़ी संख्या में भाग ले रहे थे। महाभोज स्थल का दृश्य किसी रैली सा था जो रात में रोशनी से नहाई थी। मुख्य द्वार पर ग्रामीण सभ्यजनों को कोहनी मार कर ठेल रहे थे मगर सयाने लोगों की सलाह पर नेताजी ने महाप्रबंध में भोजन व्यवस्था, अलग-अलग ढंग से सेक्टर बांटकर की थी। निमंत्रण पत्रों के साथ तीन इंच के प्रवेश पत्र जुड़े थे।ये सूर्य के प्रकाश की तरह अलग-अलग सात रंगों के थे। जिसको जिस रंग का नसीब हुआ उसके लिए भोज स्थल के द्वार उसी रंग तक आकर सीमित हो गये।सूर्य रश्मियों में रंगों का जो क्रम है 'बेजानीहपीनाला' मंत्र का विशेष ध्यान रखा गया था।अर्थात क्रमशः बैंगनी, जामुनी, नीला, हरा, पीला, नारंगी व लाल। अंतिम द्वार तक लाल रंग के प्रवेश पत्र वाले ही पहुंच रहे थे जो कि निषेध का सूचक है।

बड़े लोग चार पहिया वाहनों से आ रहे थे मगर क्षेत्र के मतदाताओं को केवल ट्रैक्टर-ट्रॉलियों का सहारा था। वे पूरे उत्साह से नेताजी का जयकारा भरते चले आ रहे थे।उनके लिए प्रथम बैंगनी द्वार पर ही व्यवस्था की गई थी।खीर ,पूड़ी ,सब्जी आदि का भंडारण भी उनके सम्मान में ट्रॉली में ही किया गया था। स्वयंसेवक ट्रॉली के आगे खड़े होकर वॉलिंटियर्स को बाल्टी भर-भर कर दे रहे थे। पूड़ी की ट्रॉली पर भीड़ इकट्ठी हुई तो गांव वाले गमछों में बांधने लगे।'अहो ग्राम्य जीवन भी क्या है' ? कहने वाले की आत्मा धरती पर उतरती तो उनकी गतिविधियां देखकर विस्मित हो जाती। सभी ग्रामीण अपने ही बंधु बांधवों से परेशान एक बार में जो सामग्री जितनी हाथ में लगी,प्लेट में डालकर कछुआ चाल से सरक रहे थे। स्थिति यह कि रुकने और सेवन न करने से सामान टपकने लगा जिसका लाभ दूसरे दिन जीव-जंतुओं ने उठाया होगा। सब्जियां काउंटरों पर अंगड़ाई लेती नजर आ रही थीं। मिठाई भगदड़ में लुट गई। जिसको जितनी मिली दूर जाकर पेलने लगा। मन भर गया तो बांटने लगे। अब कौन किसकी प्लेट का बचा लेकर अपनी तौहीन कराता ? उन्होंने जोश में आकर शेष काउंटरों पर जलवा दिखा दिया।

जो प्लेट लेकर इधर-उधर भाग रहे थे उनमें से कुछ गिरने लगे। प्लेटों में संचित मां अन्नपूर्णा का आशीष मातृभूमि का चुंबन कर श्रृंगार करने लगा। कहीं कहीं भारत मां का पुराना अक्स उभरने लगा जो शिव पार्वती के समय था। इससे राष्ट्रवादियों में जोश भर गया।वह दुगने उत्साह से गतिविधियां बढ़ाने में जुट गये।फिर तो कारपेट का रंग ही बदल गया। अब ग्रामीण तो होते ही भोले हैं। उनका बनावटी व्यवहार नहीं होता। खाना खाते में ऐसे लगे जैसे बरसों के भूखे हों। जल्दी-जल्दी चबाते-लीलते। कुछ मुंह में और कुछ मुंह से बाहर। एक के मुंह से रसगुल्ले का रस चू रहा था। एक की मूछों में दही बड़े का दही क्या लगा डाइ की हुई मूछें फिर से सफेद हो गईं। कुछ नए लड़के प्लेट लेकर ऐसे चल रहे थे जैसी राज्याभिषेक हुआ हो। अपनी मस्ती में चूर।न दाएं वाले से मतलब न बाएं वाले से। कुछ अपने ही रंग में आगे-पीछे हो रहे थे।

आमंत्रितों में नगर के प्रतिष्ठित उद्योगपति,डॉक्टर, वक़ील, पत्रकार, व्यवसायी, समाजसेवी, शासकीय अधिकारी-कर्मचारी, दोनों पक्षों के छोटे बड़े रिश्तेदार थे जो अपनी औक़ात अनुसार अपने रंग के सेक्टर में प्रवेश कर रहे थे। दूसरे और तीसरे यानि जामुनी और नीले रंग की व्यवस्थायें कुछ अलग थीं। वहां पत्तल भोज का प्रबंध था। यहां धक्कामुक्की नहीं थी मगर भीड़ में खड़े लोगों में कसमसाहट भी कम न थी। सर्वर बार बार आने में आलस दिखा रहे थे।यद्यपि नेताजी के कुछ सर्वेक्षक डटे थे किंतु उनकी निष्ठा संदिग्ध थी।उनकी आंखें खुली थी पर दृष्टिबोध मुंदा हुआ था। चौथे और पांचवें रंग में आते-आते पदार्थों की विविधतायें दिखने लगीं। टैंकर की जगह फिल्टर वाटर की बोतलें। भीड़ थी पर गले में बंधी टाई किसी दूसरे पर चीखने नहीं देती। छठा और सातवां नारंगी और लाल रंग तो परमावस्था का प्रतीक है। यहां देव एकादशी होने से फलाहार वालों की भी समुचित व्यवस्था थीपर यहां आई.ए.एस.,आइ. पी. एस., सचिवालयकर्मी, मंत्रीमंडल के सदस्य ही पहुंच रहे थे।इससे पता भी चल रहा था कि कौन नेताजी के कितने और कहां तक करीब है।

कानून और न्याय

विदेशी वकील-2

विनय झैलावत

(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

विदेशी विधि फर्मों को भारत में प्रैक्टिस की अनुमति

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि भारत का सर्वोच्च न्यायालय एक प्रकरण में यह कह चुका है कि विदेशी लॉ फर्म/कंपनियां या विदेशी वकील भारत में लॉ के पेशे का प्रेक्टिस नहीं कर सकते। वे भारतीय ग्राहकों को केवल अस्थायी आधार पर 'फ्लाई इन एंड फ्लाई आउट' (उड़ान पलायन अथवा उड़ान भर कर आना जाना) के आधार पर सलाह दे सकते हैं। यह भी कहा गया कि विदेशी वकीलों को अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्यिक मध्यस्थता से संबंधित अनुबंध से उत्पन्न विवादों के संबंध में मध्यस्थता कार्यवाही करने के लिए भारत आने से रोका नहीं जा सकता है।

भारतीय वकीलों की दक्षता और मानक अंतर्राष्ट्रीय मानकों के बराबर हैं। भारत में लॉ बिरादरी लाभ में होगी यदि भारत में लॉ प्रैक्टिस पारस्परिकता के सिद्धांत के आधार पर प्रतिबंधित, नियंत्रित और विनियमित तरीके से विदेशी वकीलों के लिए खोला जाता है। इस तरह का दृष्टिकोण भारतीय और विदेशी वकीलों दोनों के लिए पारस्परिक रूप से फायदेमंद होगा, और ये नियम इस दिशा में बार काउंसिल ऑफ इंडिया द्वारा एक कदम का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये नियम भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) को प्रोत्साहित करने और देश को अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्यिक मध्यस्थता के केंद्र के रूप में स्थापित करने के बारे में चिंताओं को भी संबोधित करेंगे।

सन् 2023 में भारत में विदेशी वकीलों और विदेशी लॉ फर्मों के पंजीकरण और विनियमन के लिए बार काउंसिल ऑफ इंडिया नियम, 2022 को अधिसूचित किया था। बार काउंसिल ऑफ इंडिया इन नियमों को लागू करने का संकल्प लेती है, जिससे विदेशी वकील और विदेशी लॉ फर्म पारस्परिकता के सिद्धांत पर भारत में विदेशी लॉ और विविध अंतरराष्ट्रीय लॉ और अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता मामलों का प्रैक्टिस अच्छी तरह से परिभाषित, विनियमित और नियंत्रित तरीके से कर सकें। विदेशी लॉ के प्रैक्टिस के क्षेत्र में विदेशी वकीलों के लिए भारत में लॉ प्रैक्टिस खोलना अथवा गैर-विवादास्पद मामलों और अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता मामलों में विविध अंतर्राष्ट्रीय लॉ मुद्दों से भारत में लॉ पेशे/डोमेन को बढ़ने में मदद मिलेगी और भारत में वकीलों को भी लाभ होगा। यह कहा गया है कि यह खुलेपन को प्रतिबंधित, अच्छी तरह से नियंत्रित और विनियमित किया जाएगा ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह भारत और विदेशों के वकीलों के लिए पारस्परिक रूप से लाभकारी है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि भारत का सर्वोच्च न्यायालय एक प्रकरण में यह कह चुका है कि विदेशी लॉ फर्म/कंपनियां या विदेशी वकील भारत में लॉ के पेशे का प्रेक्टिस नहीं कर सकते हैं। न तो मुकदमेबाजी में या गैर-मुकदमा पक्ष में। वे भारतीय ग्राहकों को केवल अस्थायी आधार पर 'फ्लाई इन एंड फ्लाई आउट' (उड़ान पलायन अथवा उड़ान भर कर आना जाना) के आधार पर सलाह दे सकते हैं। यह भी कहा गया था कि विदेशी वकीलों को अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्यिक मध्यस्थता से संबंधित अनुबंध से उत्पन्न विवादों के संबंध में मध्यस्थता कार्यवाही करने के लिए भारत आने से रोका नहीं जा सकता है। नियम 3 निर्दिष्ट करता है कि किसी विदेशी वकील या विदेशी विधि फर्म को भारत में विधि का प्रैक्टिस करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। जब तक कि वह इन नियमों के अधीन भारतीय विधिज्ञ परिषद में रजिस्ट्रीकृत न हो। यह भारतीय अधिवक्ताओं और भारतीय विधि फर्मों पर लागू नियमों के अनुसार विदेशी वकील और विदेशी विधि फर्म के रूप में पंजीकरण की मांग करने पर लागू होता है। बशर्ते कि यह निषेध निम्नलिखित शर्तों के अधीन 'फ्लाई-इन, फ्लाई-आउट' आधार पर आयोजित विदेशी वकील या विदेशी लॉ फर्म द्वारा लॉ के प्रैक्टिस पर लागू नहीं होगा।

इस तरह का प्रैक्टिस सख्ती से विदेशी लॉ, विदेशी वकील की अपनी लॉ प्रणाली, या विविध अंतरराष्ट्रीय लॉ मुद्दों के विषय में भारत में ग्राहकों को लॉ सलाह प्रदान करने तक सीमित है, और भारतीय लॉ के तहत परिभाषित प्रैक्टिस की राशि नहीं होनी चाहिए। विदेशी वकील या विदेशी लॉ फर्म की सगाई या विशेषज्ञता या तो एक विदेशी देश में या भारत में ग्राहक द्वारा प्राप्त किया जाना चाहिए। विदेशी वकील या विदेशी लॉ फर्म को इस तरह के लॉ प्रैक्टिस के उद्देश्य से भारत में किसी भी कार्यालय, बुनियादी ढांचे या नियमित उपस्थिति की स्थापना, संचालन या रखरखाव नहीं करना चाहिए। भारत में इस तरह के प्रैक्टिस की कुल अवधि किसी भी 12 महीने की अवधि के भीतर कुल मिलाकर 60 दिनों से अधिक नहीं होगी, जिसकी गणना भारत में आगमन के पहले दिन से शुरू होगी। 12 महीने की अवधि के भीतर उपस्थिति के बाद के सभी दिनों को लगातार गिना जाएगा, चाहे कोई भी अंतरिम प्रस्थान और भारत में पुनः प्रवेश हो।

विदेशी वकीलों की गतिविधियों को 'फ्लाई-इन, फ्लाई-आउट' प्रैक्टिस के रूप में अनुमेय के रूप में अर्हता प्राप्त करने या भारतीय लॉ के तहत निषिद्ध प्रैक्टिस का गठन करने के बारे में किसी भी विवाद के मामले में, मामले का निर्धारण बार काउंसिल ऑफ इंडिया द्वारा किया जाएगा। सभी नियम और विनियम जो पंजीकृत विदेशी वकीलों और पंजीकृत विदेशी लॉ फर्मों पर लागू होते हैं, उनकी गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए, जिसमें विदेशी वकीलों और विदेशी लॉ फर्मों के लिए आचार संहिता की प्रयोज्यता का विस्तार करना शामिल है, विदेशी वकीलों और विदेशी लॉ फर्मों पर भी लागू होंगे जो इन नियमों के तहत स्पष्ट रूप से छूट प्राप्त होने के अलावा 'फ्लाई-इन, फ्लाई-आउट' प्रैक्टिस में संलग्न हैं।

संशोधित नियमों का नियम 8 भारत में विदेशी लॉ फर्मों द्वारा प्रैक्टिस के दायरे और प्रकृति को रेखांकित करता है। नियमों के अधीन रजिस्ट्रीकृत कोई विदेशी वकील या विधि फर्म भारत में विधि का प्रैक्टिस करने का हकदार होगा, केवल ऐसे अपवादों, शर्तों और सीमाओं के अधीन रहते हुए, जैसा कि इन नियमों के अधीन अधिकथित किया गया है। ऐसे वकील को अधिनियम की धारा 29, 30 और 33 के अर्थ के भीतर एक वकील माना जाएगा, जो ऐसे कृत्यों और कर्मों के रूप में हैं जो एक विदेशी वकील के रूप में इन नियमों के तहत उसके द्वारा परिकल्पित या निष्पादित किए जाने की अनुमति दी गई है। हालांकि, एक विदेशी वकील या विदेशी लॉ फर्म अधिवक्ता अधिनियम के अध्याय 'ट' के तहत कार्यवाही के अधीन नहीं होगी। बल्कि किसी भी वास्तविक कदाचार के मामले में, बार काउंसिल ऑफ इंडिया ऐसे विदेशी वकील या विदेशी लॉ फर्म के पंजीकरण को रद्द कर सकता है, जैसा भी मामला हो।

इन नियमों के अंतर्गत सूचीबद्ध निषिद्ध कार्यकलाप नियम 10 के अंतर्गत यथा निर्धारित पंजीकरण के निलंबन अथवा निरस्तीकरण सहित शास्तियों के माध्यम से प्रवर्तनीय होंगे। भारत में एक विदेशी वकील या विदेशी लॉ फर्म द्वारा लॉ का प्रैक्टिस विदेशी लॉ और/या अंतरराष्ट्रीय लॉ से जुड़े गैर-विवादास्पद क्षेत्रों तक सीमित होगा। प्रैक्टिस के अनुमेय क्षेत्रों में शामिल हैं। संयुक्त उद्यम, विलय और अधिग्रहण, बौद्धिक संपदा मामलों, अनुबंधों का प्रारूपण और अन्य संबंधित लेन-देन संबंधी कार्य जैसे कॉर्पोरेट लॉ मामलों में संलग्न होना, बशर्ते कि ऐसा कार्य पारस्परिक आधार पर हो। भारत में आयोजित संस्थागत और तदर्थ अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थ दोनों मामलों में मुवक्किलों का प्रतिनिधित्व करना बशर्ते कि ऐसा अभ्यावेदन इन नियमों अथवा अधिवक्ता अधिनियम, 1961 के उपबंधों का उल्लंघन न करता हो। ऐसे ग्राहकों में ऐसे व्यक्ति, फर्म, कंपनियां, निगम, ट्रस्ट या सोसायटी शामिल हो सकते हैं जिनका प्रमुख कार्यालय या पता किसी विदेशी देश में है। इन मध्यस्थता मामलों में विदेशी लॉ शामिल हो सकते हैं, अंतरराष्ट्रीय लॉ, या वकील के गृह देश के अलावा अन्य न्यायालयों के लॉ। प्राथमिक योग्यता के अपने देश के कानूनों, अंतरराष्ट्रीय लॉ और प्राथमिक योग्यता के देश के अलावा अन्य न्यायालयों के विदेशी कानूनों के बारे में लॉ सलाह और राय प्रदान करना।

भारत में विदेशी वकीलों या विदेशी लॉ फर्मों द्वारा लॉ के प्रैक्टिस में लॉ सलाह प्रदान करना, लेनदेन करना, और प्राथमिक योग्यता के अपने देश के कानूनों, अंतर्राष्ट्रीय लॉ और अन्य न्यायालयों के विदेशी कानूनों पर राय देना। ऐसे ग्राहकों में ऐसे व्यक्ति, फर्म, कंपनियां, निगम, ट्रस्ट या सोसायटी शामिल हो सकते हैं जिनका प्रमुख कार्यालय या पता किसी विदेशी देश में है। इन मध्यस्थता मामलों में विदेशी लॉ शामिल हो सकता है, अंतरराष्ट्रीय लॉ, या इसके संयोजन। लॉ विशेषज्ञता और सलाह प्रदान करना, और इसके लिए एक वकील के रूप में उपस्थित होना। ऐसी संस्थाएं जिनका विदेश में उनकी प्राथमिक योग्यता या किसी अन्य विदेशी देश में प्रमुख कार्यालय या पता है, अदालतों, अधिकरणों, बोर्डों या सांविधिक प्राधिकरणों के अलावा अन्य निकायों के समक्ष कार्यवाही में किसी देश या अंतरराष्ट्रीय लॉ के विदेशी लॉ से संबंधित सलाह या सहायता मांगने वाली संस्थाएं या व्यक्ति, जिन्हें शपथ पर साक्ष्य दर्ज करने के लिए लॉ रूप से अधिकार नहीं है। इस तरह के काम में प्राथमिक योग्यता के देश के विदेशी लॉ के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय लॉ और अन्य न्यायालयों के विदेशी कानूनों का आवश्यक ज्ञान शामिल होना चाहिए, सम्मिलित होंगे।

गीता जयंती पर विशेष

डॉ. जीवन एस रजक

साहित्यकार एवं प्रशासनिक सेवा के अधिकारी

चरित्र निर्माण का सर्वोत्तम साधन है श्रीमद्भगवद्गीता

श्रीमद्भगवद्गीता धर्म, कर्म, नीति और दर्शन की दृष्टि से भारत का ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है। यह सत्य है कि गीता सनातन हिन्दूधर्म का सबसे पवित्र ग्रंथ है, किन्तु गीता का संदेश सार्वभौमिक है। इसके उपदेश किसी सम्प्रदाय विशेष के लिए नहीं हैं, बल्कि संपूर्ण मानवजाति के लिए कल्याणकारी हैं।

वास्तव में गीता हिन्दू धर्म का ही नहीं मानव धर्म का ग्रंथ है। मानव धर्म, मानव के आचरण पर नियंत्रण रखता है, साथ ही उसका नियमन और परिचालन भी करता है। गीता में मानव जीवन से संबंधित जटिल से जटिल समस्याओं का विवेचन और शाश्वत समाधान प्रस्तुत किया गया है। इसमें ऐसी समस्याओं का प्रस्तुतिकरण किया गया है, जिनका संबंध धर्म, व्यक्ति, जाति या देशकाल से नहीं है। अतः गीता का महत्व सार्वभौमिक है। मनुष्य के जीवन में जितना महत्व समस्याओं का नहीं है, उससे अधिक महत्व समस्याओं के निराकरण की विधियों का है। एक नैतिक ग्रंथ होने के नाते गीता इस अर्थ में अत्यंत महत्वपूर्ण मार्गदर्शन करती है और मानव आचरण से संबंधित समस्याओं के निराकरण और न्यायपूर्ण जीवन के लिए प्रेरणा देती है। धर्म, दर्शन, अध्यात्म, नैतिकता आदि मानव जीवन का मूल आधार और श्रीमद्भगवद्गीता इन सब का कोष है। इसलिए संपूर्ण मानव जाति के लिए गीता का संबंध जीवन, आचार, धर्म, अध्यात्म और दर्शन से है।

गीता आचरण में कर्तव्य और अकर्तव्य की समस्या का निदान खोजती है। कभी-कभी जीवन में ऐसी विकट परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं, जिनमें यह समझ नहीं आता कि क्या करें और क्या न करें? ऐसी ही विकट स्थितियों में श्रीमद्भगदगीता मानव जाति का मार्गदर्शन करती है। कुरुक्षेत्र में अर्जुन ने जब देखा कि उसे अपने ही स्वजनों से युद्ध करना है, तो युद्ध के भयावह परिणामों के बारे में सोचकर उसका हृदय निराशा, दुःख, मोह और संताप से व्याकुल हो गया। ऐसी स्थिति में अर्जुन ने कहा कि वह भिक्षा मांग कर जीवन यापन कर लेगा किन्तु युद्ध करके अपनों का वध नहीं करेगा। तब किंकर्तव्यविमूढ़ता की अवस्था को प्राप्त अर्जुन का मार्गदर्शन भगवान श्रीकृष्ण करते हैं। अर्जुन और श्रीकृष्ण का संवाद ही गीता का प्रतिपाद्य विषय है। इस महत्वपूर्ण संवाद में गीता व्यक्तिगत और सामाजिक नैतिकता के मूल सूत्रों तथा दार्शनिक मन्तव्यों की विवेचना करती है।

भारतीय धर्म शास्त्रों में गीता का महत्व सर्वोपरि है। इसमें सभी धर्म शास्त्रों का समाहार है। इसलिए गीता को 'सर्वशास्त्रमयी' कहा गया है। गीता में वेदों तथा उपनिषदों में वर्णित दार्शनिक एवं नैतिक सिद्धांत का मूल तत्व समाहित है। संभवतः गीता विश्व का एक मात्र धर्मग्रंथ है, जिसमें जीवन के परमलक्ष्य 'मोक्ष' की प्राप्ति के लिए 'कर्म' के मार्ग को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। गीता कहती है कि अपने जीवन में कोई भी जीव एक क्षण भी बिना कर्म किए नहीं रह सकता है, उसे प्रत्येक क्षण कुछ न कुछ कर्म करना ही होता है। अर्थात् यह संसार कर्म प्रधान है और कर्मों से ही मोक्ष का मार्ग सुलभ है।

गीता का 'निष्काम कर्म योग' संपूर्ण मानवजाति के लिए आदर्श है। निष्काम कर्म अर्थात् मनुष्य का अधिकार कर्म करने पर है, फल की प्राप्ति पर उसका अधिकार नहीं है। इसलिए मनुष्य को कर्मफल की चिंता किए बिना पूरी निष्ठा से अपना कर्म करना चाहिए। कर्मों के अनुसार मनुष्य को उसके कर्मों का फल अवश्य ही मिलता है। अच्छे कर्मों का फल अच्छा तथा बुरे कर्मों का फल बुरा। आज की इस आधुनिक दुनिया में मनुष्य अत्यंत स्वार्थी और धैर्यहीन हो गया है, वह कोई भी कार्य करने से पहले उसके परिणाम के बारे में सोचता है और अपेक्षानुरूप परिणाम न मिलने पर परेशान हो जाता है। दुनिया में आत्महत्या का एक मूल कारण यही है। गीता का निष्काम कर्म मानवजाति को कर्म फल से प्राप्त चिंताओं और व्यथाओं से मुक्त करता है। सोचिए, अगर मनुष्य निष्काम कर्म के मार्ग का अनुसरण कर ले तो संपूर्ण जगत में दुःख-संताप होगा ही नहीं और संपूर्ण मानव जाति सर्वदा आनंदित और चिंता-परेशानियों से मुक्त रहेगी।

गीता कहती है कि जब कोई मनुष्य समस्त भौतिक इच्छाओं का त्याग करके न तो इन्द्रिय तृप्ति के लिए कार्य करता है और न सकाम कर्मों में प्रवृत्त होता है, तो वह मनुष्य संन्यासी कहलाता है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह अपने मन की सहायता से अपना उद्धार करे और अपने मन को नीचे न गिरने दे, क्योंकि जिसने मन को जीत लिया है, उसके लिए मन सर्वश्रेष्ठ मित्र है, किन्तु जो ऐसा नहीं कर पाता है उसके लिए मन सबसे बड़ा शत्रु हो जाता है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह मन को विचलित न होने दे और शरीर, मन तथा कर्म से निरन्तर संयम का अभ्यास करे तभी उसे मोक्ष की प्राप्ति हो सकेगी। गीता की एक बात जो सब जानते हैं, किन्तु उसे उस दृष्टि से समझने का प्रयास नहीं करते जिस उद्देश्य से वह कही गई है। भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि इस चराचर के कण-कण में वह स्वयं (ईश्वर) विद्यमान हैं, प्रत्येक जीव के अंदर वह विद्यमान हैं। सामान्य शब्दों में कहें तो ईश्वर हम सब के भीतर है। अर्थात् वास्तव में हम कर्ता नहीं हैं। हम एक माध्यम मात्र हैं। कर्ता तो वह दिव्य शक्ति है, जो हमारे भीतर विद्यमान है, जिसे हम ईश्वर की संज्ञा देते हैं। अर्थात् हम जो कुछ भी करते हैं, वह वास्तव में हमारे भीतर बैठा हुआ ईश्वर हमसे करवा रहा है। जीवन में जो कुछ भी हो रहा है, वह ईश्वर की इच्छा से हो रहा है। सुख-दुख, अच्छा-बुरा, सफलता-असफलता सब कुछ हमारे भीतर बैठे हुए ईश्वर की इच्छा से निर्धारित होता है। कहने का मतलब यह है कि जो कुछ भी हमारे जीवन में और इस संसार में घटित हो रहा है, वह ईश्वर की इच्छा से घटित हो रहा है, हम सब माध्यम मात्र हैं। कर्ता तो ईश्वर है। इसलिए बिना किसी आसक्ति के हमें अपने लिए नियत सभी कर्मों को पूर्ण मनोयोग से करते रहना चाहिए, शेष सब ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए। ऐसा करने से जीवन में कोई दुख, संताप और परेशानी नहीं होगी।

वर्तमान समय में ऐसा लगता है कि मानव जाति मानसिक रूप से बहुत कमजोर हो गई है। आज की पीढ़ी में छोटी-छोटी बातों पर आत्महत्या करने, झगड़ा करने, अत्यधिक तनाव और अवसाद जैसी स्थितियाँ आम बात हो गई हैं। इन सभी समस्याओं के निदान के लिए ही कदाचित गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से बार-बार कहा है कि सभी प्राणियों के भीतर मैं ही हूँ और मैं ही सब कुछ करने वाला कर्ता हूँ, ताकि मानव यहाँ एक बात और विशेष रूप से समझना आवश्यक है। वह यह कि हम सब के भीतर ईश्वर विद्यमान हैं, अर्थात् हम कह सकते हैं कि इस ब्रह्माण्ड की 'सुपर अल्टीमेट पावर' या परम शक्ति हम सब के भीतर है। जब इतनी बड़ी शक्ति हम सब के भीतर मौजूद है, तो इस जगत में कुछ भी किया जाना असंभव नहीं है। आवश्यकता है उस शक्ति, उस अपरिमित ऊर्जा को जागृत करने की। वह जागृत होती है, आत्म विश्वास से और सकारात्मक चिंतन से। कहने का आशय है कि स्वयं पर विश्वास रखने और सकारात्मक ऊर्जा के प्रवाह से हम जीवन में वह सब कुछ हासिल कर सकते हैं, जो हम सोचते हैं। क्योंकि हमारे भीतर ईश्वर रूपी परम शक्ति विद्यमान है और जब हम आत्म विश्वास के साथ लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में अग्रसर होते हैं, तो वह परम शक्ति हमें अपने लक्ष्य तक पहुँचाने का मार्ग स्वतः ही प्रशस्त करती है।

मुझे यह कहते हुए अत्यंत दुख है कि कम्प्यूटर, मोबाइल और सोशल मीडिया के युग में हमारी वर्तमान युवा पीढ़ी किताबों से बिल्कुल दूर होती जा रही है। विशेष रूप से भारत के धार्मिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक ग्रंथों जैसे-वेद, उपनिषद, स्मृतियाँ, वेदांत, गीता, रामायण, मानस आदि को पढ़ने में किसी की कोई रुचि दिखाई नहीं देती है। आज सनातन धर्म को मानने वाले भारत के लगभग हर घर में भगवद्गीता मिलेगी, लेकिन मिलेगी कहाँ, पूजा घर में, जहाँ रोज उसकी पूजा की जाती है, लेकिन उसे पढ़ा नहीं जाता है। गीता और भारत के अन्य प्राचीन ग्रंथों के बारे में एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि ये सभी मुख्यतः संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं, और मुझे यह कहने में कोई दुख नहीं है, कि हमारे देश के शैक्षणिक पाठ्यक्रम में संस्कृत सिर्फ प्रतीकात्मक रूप से पढ़ाई जाती है।

इन ग्रंथों के प्रति अरुचि होने का यह भी एक मुख्य कारण है, लेकिन भारत के यही धार्मिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक ग्रंथ हज़ारों वर्षों से हमारी धार्मिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक परम्परा का मूल आधार रहे हैं। हमारी सामाजिकता और जीवन चरित्र के निर्माण का सबसे बड़े स्त्रोत रहे हैं। श्रीमद्भगवद्गीता वास्तव में सभी सनातन धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथों का सार है। गीता में मानव जीवन से जुड़ी हुई हर समस्या का सर्वश्रेष्ठ समाधान विद्यमान है। गीता के श्लोक चरित्र निर्माण के सर्वोत्तम प्रयोजन बताये गये हैं, जिनके अनुसरण से मनुष्य लौकिक सुख और पारलौकिक आनंद एवं मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

गीता जयंती पर विशेष

डॉ. लोकेन्द्रसिंह कोट

लेखक साहित्यकार हैं।

अठारह अध्यायों में बँटा है जीवन का सार-आधार

धर्मग्रंथों का सार श्रीमद्भागवत गीता का ज्ञान कालातीत है। वह प्रत्येक काल में एक समान रूप से प्रासंगिक होता है। आज भी एक शांत मन से यदि आप गीता के जिस पृष्ठ को अनायास खोल लेते हैं तो यकीन मानिये उसके आस-पास ही अपने वर्तमान के सभी प्रश्नों का उत्तर होगा, जो समस्याएं उस समय होगी उसका रास्ता आपको दिखाई देगा। बात सिर्फ विश्वास की है। यदि अविष्वास से आप इसे करते हैं तो उजाला भी आपको अंधेरा ही दिखाई देगा। गीता में तत्वदर्शी श्री कृष्ण का स्पष्ट स्वरूप खुल कर बाहर आता है। यह एक आत्मज्ञानी की विशेषता है कि उन्हे कुछ जानने की आवश्यकता नहीं होती, उनके मुखारविंद से सतत व्यवहारिक ज्ञान ही बहता है। वे प्रकृतिमय हो जाते है, उसके लिए सब कुछ दृश्य रूप में द्वेत रहते हुए आंतरिक रूप से अद्वैत हो जाता है, उसकी दृष्टि विहंगम हो जाती है। उसके पास भूतकाल और भविष्य की स्पष्ट दृष्टि होती है जिससे उनके लिए काल त्रिआयामी स्वरूप में जानने में आ जाता है। ऐसे में वे तत्वज्ञानी होते है और किसी के लिए भी वे प्रकाश स्तंभ की तरह होते हैं। गीता इसी तत्व ज्ञान का विस्तृत व्याख्यान है।

प्रत्येक जीवन देखा जाय तो महाभारत के समान ही है। यह हमें देखना है कि हमारा कौन सा अध्याय अभी चल रहा है। भारत का अर्थ है प्रताप, वैभव, प्रभा और महाभारत का अर्थ है अति वैभवषाली। हमारा जीवन वैसे भी बहुत वैभवशाली है। संसार का मूल पंच तत्व हमें बगैर किसी परिश्रम के पुरस्कार में मिले हैं। हवा, पानी, आकाश अग्नि, पृथ्वी। इसलिए हमारा जीवन इतना वैभवशाली माना गया है। उस वैभव को भूलते हुए हमसे कई कार्य में या तो हमारा होष नहीं होता है या फिर आंखें मूंद लेते हैं। यहॉ बेहोश मन दुर्योधन का प्रतीक है और जब हम सच से आंखें बंद कर लेते हैं वह धृतराष्ट्र का। इन दोनों स्थिति में जीवन में पराभव ही मिलता है। जीवन में तत्वज्ञान का अभाव हमे विषाद की ओर धकेलता है और पहला अध्याय प्रारंभ हो जाता है। विचारों की नकारात्मकता हमें ढँक लेती है। दुख आते हैं तो हम भागते है सबकुछ से। लेकिन भागना अंत नहीं है, उसे समझना ही जीवन है।

जब जीवन में एक मार्ग बंद होता है तो वह कई और रास्ते खुलने के लिए होता है। अर्जुन के रूप में हम जब अप्रत्याशित स्थिति को पाते है या हमारी योजना के अनुसार नहीं होने पर हमारे अंदर से यह पुकार अवश्य उठती है कि कोई तो रास्ता होगा। ऐसे में कृष्ण के रूप में उस असमंजस के चौराहे पर रास्ता स्पष्ट कर देते हैं। दूसरा अध्याय यही से प्रारंभ होता है। ध्यान में जाकर ही आप अपना अस्तित्व खोज सकते हैं कि आप वास्तव में कौन हैं। योग, ध्यान हमारे मन, आत्मा और षरीर को जोड़ कर हमारे जीवन और मन दोनों के बंद मार्गों को ही खोल देता है। इससे निकलते ही हम तीसरे अध्याय में प्रविष्ट हो जात हैं, कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन से हम परिचित हैं। अक्सर हमें लगता है कि बगैर फल की चिंता किए हम कैसे किसी काम को कर सकते हैं। एक अटल जीवन युद्ध भूमि में कोई खड़ा हो तो उसको कहा भी क्या कहा जा सकता है सिवाय इसके कि जो कुछ भी होगा देखा जाएगा, उसकी चिंता मत कर, आगे बढ़। और दूसरा पक्ष यह है कि यदि पहले से ही हमने परिणाम निर्धारित कर रखा है तो असफलता में हम टूट सकते हैं या फिर उससे बेहतर भी मिल सकता है, उस पर हमने खुद रोक लगा रखी है।

जब जीवन में बहुत द्वंद हो, अंतर्विरोध हो तो यह मानना चाहिए कि हम पांचवें अध्याय में हैं। विचार का द्वंद हमारे चैन को खत्म करने लगता है तभी कृष्ण कहते हैं कि यदि कोई समस्या उत्पन्न हुई है तो उसका समाधान भी उसी के आस-पास ही होगा। हमारे पास श्वास जैसी अद्भुत शक्ति है जिसके सहारे हम अपनी भावनाओं, कोध जैसी वृत्तियों पर कार्य कर सकते हैं। विभिन्न प्रकार के प्राणायाम और क्रियाएँ आज लोगों में बदलाव ला रही है। कृष्ण यहाँ उस संन्यास की बात करते हैं जो बाहरी न होकर आंतरिक हो। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर से सन्यास। यह सब होश में आने पर ही संभव है। ध्यान योग के छठे अध्याय में मन को परिभाषित किया है कि बाहर कोई हमारा शत्रु है ही नहीं अंदर ही है और वह है मन। मन की सफाई, जीवन की सफाई है। जैसे हलचल वाले पानी में हमें कुछ दिखाई नहीं देगा। शांत पानी में हम सब कुछ देख सकते हैं। वैसे ही मन शांत होगा तभी हम अपना सर्वश्रेष्ठ दे सकते हैं और सफलता को भी निश्चित कर सकते हैं।

सातवे अध्याय के माध्यम से ज्ञान विज्ञान योग को आगे बढ़ाते हुए कृष्ण कहते हैं कि हमारी प्रकृति के आठ अवयव हैं जिनमें पंच महाभूत भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाष के साथ मन, बुद्धि, अहंकार आते हैं। इन अवयवों को तीन गुण ढँक कर रखते हैं। रजस, तमस और सत्व। हमारी जीवन यात्रा इन्ही के

मध्य तैरती है। कभी हममे आसुरी वृत्ति आ जाती है, कभी हम अति अहंकार का शिकार हो जाते है और कभी हम एकदम पवित्र, स्वच्छ होते हैं। देव और असुर कहीं बाहर न होकर हमारे अंदर ही है। जिसको बढ़ाएंगे वही बढ़ेगा। आठवें अध्याय में अक्षर ब्रम्ह की बात है। जो कभी क्षय नहीं हो वही अक्षय और ब्रम्ह का अर्थ है सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ, परम। कुछ है हमारे अंदर भी जो यह दिखाता है कि जिसका कभी क्षय नहीं होगा। शरीर के अंदर जो प्राण ऊर्जा है, आत्मा है उसका क्षय कभी नहीं होता है और इसका आभास हमें भी होता है। हमारा मूल कभी नष्ट नहीं हो सकता है तो आधा दुख तो इस बात की गहराई से जाता रहता है।

नवे अध्याय में जीवन के राज योग और गूढ़ ज्ञान का ज्ञान परिलक्षित होता है कि महारा ध्यान अक्सर नकारात्मकता की ओर ही ज्यादा रहता है। सौ अच्छे गुण में से दो दुर्गण पर ही ध्यान जाता है और हम जीवन से परे होने लगते हैं। जीवन की विशेषता तो इसमें है कि दोनों अच्छे व बुरे दोनों की स्वीकार्यता हो तभी हम व्यक्ति को समझ पाएंगे। एक बुरी बात में अटक कर हम उसके सौ गुणों को खो देंगे। दसवें अध्याय में विभूति की बात आती है। विभूति का अर्थ है ऐश्वर्य से परिपूर्ण। वास्तव में सुख और दुख दोनों एक दूसरे के विपरीत न होकर एक दूसरे के पूरक है क्योकि एक हीरो तभी हीरो है जबकि खलनायक है और खलनायक भी तभी जब हीरो है। एक फिल्म जिसमें केवल हीरो हो उसे कोई नहीं देखने जाता है। इसलिए हीरो और खलनायक एक दूसरे के पूरक है, ठीक उसी तरह सुख और दुख भी एक दूसरे के पूरक हैं। ग्यारहवें अध्याय में विश्वरूप अर्थात उस संपूर्णता का दर्शन है जो हमारे आस-पास व्याप्त है। गुरू, ईश्वर, प्रकृति तीनो एक ही हैं और वृहद हैं। वे हमारे साथ उपस्थित हैं। एक छोटे से बीज में कितने और बीज हैं इसकी कल्पना हम नहीं कर सकते, वह अनंत है। हवा बगैर दिखाई दिये ही अरबों-खरबों प्राणीमात्र को जीवन दे रही है, जल पोषित कर रहा होता है, धरा चंद दानों से भंडार भर रही होती है। जब यह विस्तार समझ में आ जाता है तो हमें वह अनुपम शक्ति भी समझ में आ जाती है। बारहवाँ अध्याय भक्ति पर आधारित है। भक्ति या दिव्य प्रेम हो तो जीवन में बाकी कुछ भी नहीं हो तो भी सब कुछ मिल जाता है। मीरा, शबरी के पास भक्ति के अलावा कुछ नहीं था तो उनके अपने संकल्प पूरे हुए। हृदय से किया गया प्रेम, समर्पण भी आपको सबसे मुक्त कर सकता है। शिद्दत से किया हुआ कार्य प्रतिफल स्वतः देता है।

तेरहवें अध्याय में क्षेत्र यानी आकाश तत्व का महत्व बताते हैं। आकाश जैसे अनंत है वैसे ही हम भी आदि अनंत हैं। यह जीवन केवल साठ-सत्तर-अस्सी सालों में बँटा है लेकिन विस्तार से देंखे तो न इसका इस पार छोर है न ही उस पार। इसलिए छोटी-छोटी घटनाओं में उलझ कर हम अपना अमूल्य जीवन यूँ ही खपा देते हैं। जबकि जीवन के उच्चतर लक्ष्य होते हैं। जीवन राग-द्वेष की भेंट चढ़ जाता है। चौदहवाँ अध्याय बताता है कि जीवन की पृष्ठभूमि पर स्व अर्थात स्वयं के स्वभाव में रहना अनिवार्य है। हमारा अपना सच्चा स्वरूप प्रेममय है और खुशी पाना इस जीवन का उद्देश्य। लेकिन सिर्फ खुशी के अलावा हमारे पास सब कुछ होता है। खुशी कभी-कबार की बात हो जाती है। हर एक काम के पीछे हमारी मंशा खुश होना है लेकिन स्वभाव में नहीं रहने के कारण कितने ही प्रपंच हम रच देते हैं। कई बार तो अपने आवरणों से बाहर आना भी हमारे लिए मुश्किल हो जाता है। पंद्रहवें अध्याय में देवत्व को बढ़ाने के लिए कहा गया है। हमारे अंदर जितना देवत्व बढ़ेगा उतना ही आसक्ति हटेगी, विकार दूर होंगे और ठहराव आने लगेगा। इसके बाद हमारे सारे निर्णय हमारी प्रज्ञा पर आधारित होंगे और सर्वश्रेष्ठ होंगे। जीवन की सार्थकता तो इसमें है कि हम एक प्रामाणिक जीवन को जिएँ। सोलहवाँ अध्याय हमें अच्छे होने के लिए प्रेरित करता है। जीवन में अच्छा होना एक चुनौती है वरना बुरा तो कोई भी बनने के लिए तत्पर होता ही है। हम अपना स्वभाव छोड़ते हैं तो हमारे अंदर विकार स्वाभवतः आते हैं और वे जीवन भर परेशान करते हैं। हर गुस्से के बाद पश्चाताप जुड़ा होता है, हर गलत काम के बाद ग्लानि जुड़ी होती है। अच्छे होने का परिणाम यह होता है कि एक स्थिति के बाद जीवन आसान हो जाता है, आडम्बर नहीं रह जाता है।

सत्रहवें अध्याय में शास्त्रविधि अर्थात प्रकृति के साथ चलने की बात है। प्रकृति के विरुद्ध जाकर हमने कितना इस संसार का नुकसान किया है वह सर्वविदित है। जो प्रकृति के नियम है उसमें जरा सी भी कोताही हमे सुखे, बाढ़, भूकम्प, जल स्त्रोतों की कमी, प्रदूषण के रूप में देखने को मिलती है। कई महामारियॉ हमें विनाश की ओर ले जाती हैं। अति को सभी दूर वर्जित किया गया है और हम वही करते जा रहे हैं। नदियों का दोहन, भूमि का प्रदूषण हमें चेतावनी दे रहा है कि हम शास्त्र सम्मत नहीं रहे तो बरु परिणाम भोगने के लिए तैयार रहना चाहिये। अंतिम अध्याय में इस जीवन का सार को उत्प्रेरित किया गया है जहॉ ईश्वर को पाने और उस परम सत्ता को जानने की बात है। हमारा लक्ष्य इस दुनिया को और बेहतर बनाकर जाने का होना चाहिये न कि इसे और खराब कर लोगों को संघर्ष करने के छोड़ा जाना चाहिये। इसलिए सेवा को जोड़ा गया है कि निःस्वार्थ सेवा जो किसी भी भलाई के लिए हो वह इस दुनिया को बेहतर बनाएगी। सेवा हमें ईश्वर के समीप लाती है। श्रीकृष्ण की गीता के अट्ठारह अध्याय हमें जीवन के हर एक पक्ष से रूबरू करवा देते हैं। जीवन को संतुलन में लाने के लिए बेहतर प्रयास करते हैं। युद्ध भूमि में जहां किसी को पता नहीं कल क्या होगा तभी गीता का जन्म होता है। गीता यह भी कहती है कि जीवन का साक्षात्कार करना है तो हमें भी अर्जुन अर्थात् जिज्ञासा, पिपासा बनना होगा तभी कृष्ण अर्थात् ज्ञान अवतरित होगा। जिज्ञासा, तितिक्षा के बगैर जीवन का उद्धार ही नहीं है।

घर-घर गीता, जन-जन गीता' के संकल्प के साथ गीता जयंती महोत्सव पर गरिमामय कार्यक्रम आज

धार। अखिल भारतीय विश्व गीता प्रतिष्ठानं, मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग के अधिष्ठान वीर भारत न्यास एवं विश्व गीता प्रतिष्ठानं के अंतरराष्ट्रीय गीता जयंती महोत्सव तथा जिला प्रशासन धार द्वारा 'घर-घर गीता, जन-जन गीता' के संकल्प के साथ गीता जयंती महोत्सव पर गरिमामय कार्यक्रम पीजी कॉलेज धार के सभागार में 1 दिसंबर को शाम 6.30 पर आयोजित किया गया है। कार्यक्रम में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर के पूर्व डीन डॉ. प्रभुनारायण मिश्रा मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहेंगे। मुख्य अतिथि धार जिला भाजपा अध्यक्ष श्री निलेश भारती रहेंगे। विशिष्ट अतिथि के रूप में धार जिला पत्रकार संघ के अध्यक्ष पंडित छोटू शास्त्री, सर्व ब्राह्मण समाज धार के जिला अध्यक्ष विश्वास पांडे उपस्थित रहेंगे। विश्व गीता प्रतिष्ठानं के जिला संयोजक (जिला प्रभारी) संतोष पांडेय ने बताया कि इसी कड़ी में सुबह 11 बजे श्री सांवरिया सेठ मंदिर में आयोजित गरिमामय कार्यक्रम में पीजी कॉलेज धार और शहर के विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा गीता के 15 वें अध्याय का सस्वर पाठ किया जाएंगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि न्यायाधीश प्रदीप सोनी रहेंगे। विशिष्ट अतिथि सुजावल जग्गा (आईपीएस) रहेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार पंडित छोटू शास्त्री करेंगे।

गीता जयंती महोत्सव को भव्य स्वरूप प्रदान करने के बीते कई दिनों से तैयारियां की गई थी । विश्व गीता प्रतिष्ठानं के जिला संयोजक (जिला प्रभारी) संतोष पांडेय, परशुराम कल्याण बोर्ड के धार जिला प्रभारी, कार्यक्रम के व्यवस्था प्रभारी अशोक मनोहर जोशी ने शहर के गणमान्य नागरिकों से इस गरिमामय गीता जयंती महोत्सव में भाग लेकर 'घर-घर गीता' के प्रचार का संकल्प लेने का आह्वान किया है।

1100 पाठों का संकल्प और सामूहिक वाचन

महोत्सव के अंतर्गत एक प्रेरणादायक लक्ष्य निर्धारित किया गया है। जिला स्तर पर श्रीमद्भगवद्गीता के 15वें अध्याय के 1100 पाठ तथा तहसील एवं विकासखंड स्तर पर 500 पाठ का सामूहिक आयोजन किया जाएगा।

'घर-घर गीता, जन-जन गीता' का संदेश हर तबके तक पहुँचाने का प्रयास

1 दिसंबर को आयोजित होने वाले अंतर्राष्ट्रीय गीता जयंती महोत्सव का मुख्य उद्देश्य 'जन-जन गीता घर-घर गीता' के ध्येय को जन-जन तक पहुँचाना है, जिसके लिए आयोजकों ने व्यापक स्तर पर जनसंपर्क अभियान चलाया।

विश्व गीता प्रतिष्ठानम के जिला संयोजक संतोष पांडेय के मार्गदर्शन में, संस्था के सदस्यों ने जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में उपस्थित होकर धार जिले के 13 प्राचार्यों को संस्कृति विभाग द्वारा प्रकाशित गीता की पुस्तकें भेंट कीं। ये पुस्तकें छात्रों को प्रदान की जाएंगी।

इस दौरान, प्राचार्यों और विकासखंड शिक्षा अधिकारियों को गीता महोत्सव और स्कूली छात्रों द्वारा गीता के 15 वें अध्याय के सस्वर पाठ की महत्ता से अवगत कराया गया। आयोजकों ने कलेक्टर, जिपं सीईओ और विभिन्न संगठनों के प्रमुखों से भी मुलाकात कर महोत्सव का संदेश साझा किया है।

जेल के बंदियों को मिला गीता का संदेश

महोत्सव के संदेश को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाने की कड़ी में, विश्व गीता प्रतिष्ठान के सदस्यों ने जिला जेल धार का दौरा किया। जेल अधीक्षक दांगी से मुलाकात कर गीता जयंती के अवसर पर बंदियों के लिए सामूहिक गीता पाठ आयोजित करने का आग्रह किया गया, जिसे उन्होंने स्वीकार किया।

पुस्तकों का वितरण - जेल अधीक्षक ने बंदियों के बीच गीता की पुस्तकों का वितरण भी करवाया। परशुराम कल्याण बोर्ड के जिला प्रभारी अशोक मनोहर जोशी ने बंदियों को 0घर-घर गीत जन-जन गीता' का संदेश देते हुए स्वाध्याय पाठ का वाचन करवाया। उद्बोधन में जोशी ने कहा, 'अपराध से घृणा करनी चाहिए, अपराधी से नहीं। कोई भी व्यक्ति जन्म से अपराधी नहीं होता है, बल्कि परिस्थितियाँ उसे अपराध करने हेतु बाध्य करती हैं।' उन्होंने योगेश्वर कृष्ण की गीता को मोक्ष और परमेश्वर की प्राप्ति का एकमात्र माध्यम बताते हुए बंदियों को प्रतिदिन इसके उपदेशों को जीवन में उतारने के लिए प्रेरित किया।

पीएम मोदी के मन की बात के संस्करण को जिले की तीन विधानसभा के 821 बूथों पर कार्यक्रम को देखा व सुना गया

मोदी के मन की बात के 128वें संस्करण को भाजपा किसान मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष चावड़ा ने भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ सुना

धार। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात के 128वें संस्करण को जिले की धार, बदनावर और सरदारपुर विधानसभा क्षेत्र के सभी 18 मंडलों तथा 821 बूथों पर रविवार को देखा व सुना गया। भाजपा किसान मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष जयपाल सिंह चावड़ा किसान मोर्चा प्रदेश उपाध्यक्ष राजेंद्र सिंह राजपूत ने धार विधानसभा के धार ग्रामीण मंडल बूथ क्र.127 ग्राम बगड़ी तुर्क में किसान भाइयों के साथ सुना।

इस दौरान भाजपा नेता डॉ शरद विजयवर्गीय धार ग्रामीण मंडल अध्यक्ष जीवन पटेल, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा पूर्व जिला महामंत्री श्याम नायक, मनीष प्रधान मिट्ठूलाल चावड़ा विशेष रूप से मौजूद रहे।

भाजपा किसान मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष जयपाल सिंह चावड़ा ने बताया कि मन की बात कार्यक्रम में मोदी जी ने देश की प्रगति के अनेक महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला गया जिसमें मुख्य रूप से खाद्यान्न उत्पादन का नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड,प्राकृतिक खेती और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा, भारतीय खिलाड़ियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना,युवाओं के ड्रोन, स्पेस और टेक इनोवेशन की प्रशंसा समेत अनेक विषयो पर चर्चा की। प्रधानमंत्री जी के विचार सदैव प्रेरणा देते हैं और राष्ट्रसेवा के संकल्प को और दृढ़ करते हैं।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि भाजपा इंदौर संभाग प्रभारी रणवीर सिंह रावत,भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती, प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल, मनोज सोमानी ने बदनावर नगर के वार्ड क्रमांक 02 बूथ क्रमांक 61 पर तथा धार विधायक श्रीमती नीना वर्मा ने धार नगर के बूथ क्रमांक 47 पर बूथ अध्यक्ष और भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ श्रवण किया। ग्राम बगड़ी तुर्क के मन की बात कार्यक्रम अवसर पर किसान मोर्चा जिला पदाधिकारी रतन पाटीदार रवि पाटीदार मिट्ठूलाल चावड़ा विधायक प्रतिनिधि लाखन सिंह सिसोदिया लाखन सिंह राठौर राहुल चावड़ा सन्नी होड़ा रंजीत कामदार शांतिलाल शर्मा समेत भाजपा के वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित रहे।

एसआई आरका 100% कार्य होने पर मतदान केंद्र की बीएलओ एवं सहयोगी आंगनबाड़ी कार्यकर्ता को किया सम्मानित

धार । धार विधानसभा क्षेत्र के पीथमपुर नगरी के मतदान केंद्र क्रमांक 219 एवं 220 छोटी सागर पीथमपुर में सभी मतदाताओं का सत्यापन कार्य शतप्रतिशत करने पर केंद्र की बीएलओं पार्वती परमार एवं आंगनबाड़ी कार्यकर्ता ज्योति बैरागी तथा मतदान केंद्र क्रमांक

220 की बीएलओं पुष्पा हिंगवे एवं सहयोगी आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सीमा शर्मा के द्वारा सभी मतदाताओं का पुनरीक्षित कार्य 100त्न किए जाने पर नोडल ऑफिसर सुभाष जैन जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग धार तथा सहयोगी पर्यवेक्षक अमृता गुप्ता चंद्रिका सोनी एवं पूजा शर्मा पर्यवेक्षक महिला बाल विकास धार के द्वारा सभी महिला सहयोगियों का पुष्प माला से स्वागत किया गया। निर्धारित साम्यवृद्धि में लक्ष्य की पूर्ति किए जाने पर विभाग द्वारा आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के सहयोग की सराहना कर बधाई दी ।

भाजपा जिलाध्यक्ष ने बैतूलबाजार मंडल के गोडीगौला में सुनी मन की बात

बैतूल। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के महत्वाकांक्षी कार्यक्रम मन की बात का 128 वॉ प्रसारण बैतूल जिले के 1593 बूथों पर देखा व सुना गया। इसी कड़ी में भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार बैतूलबाजार मंडल के गोडी गौला बूथ क्रमांक 230 पर शामिल होकर उपस्थित ग्रामीणजनो के बीच मन की बात पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री हर महीने के अंतिम रविवार को मन की बात के

माध्यम से संवाद करते है। भारत की महान संस्कृति में आज शांति और करुणा का भाव आज के कार्यक्रम में मोदी जी सहजता से समझाया है। साथ ही लोकल फॉर वोकल से आत्मनिर्भर भारत से विकसित भारत के मंत्र को दोहराया। भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेष को लेकर भारतवासियों की भावना जब साझा की तो हर स्त्रोता और दर्शक का हदय गर्व से भर उठा। कार्यक्रम के दौरान मंडल अध्यक्ष सुनील पंवार, मंडल महामंत्री अभिषेक विक्की राठौर, उपाध्यक्ष कांति पंवार, अरविंद राठौर, उमेश राठौर सोनू राठौर ,सरपंच रेखा अहाके, तेजीराम पांसे, सुभाष लोखंडे, गोलू अहाके सहित बूथ अध्यक्ष संदीप देशमुख, बूथ महामंत्री, बूथ समिति के सदस्यों सहित बडी संख्या में ग्रामीणजन मौजूद रहे।

आज 1 दिसंबर को पांढुर्णा से प्रारंभ होगी स्वदेशी संकल्प यात्रा

बैतूल। अखिल भारतीय व्यापारी परिषद (कैट) एवं स्वदेशी जागरण मंच के संयुक्त तत्वावधान में स्वदेशी संकल्प यात्रा का शुभारंभ आज 1 दिसंबर को गुरुदेव सेवा मंडल जय स्तंभ चौक से किया जाएगा। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि बीसी भरतिया, राष्ट्रीय अध्यक्ष कैट, सुनील अग्रवाल प्रदेश अध्यक्ष कैट, प्रकाश चंद उइके अनुसूचित जनजाति आयोग के विधिक सलाहकार, सुधीर दाते क्षेत्रीय संगठन मंत्री मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ प्रदेश, स्वदेशी जागरण मंच, केशव दुबौलिया संगठन मंत्री, मध्य भारत प्रांत, संदीप घाटौड़े, पांढुर्णा नगर पालिका अध्यक्ष तथा अन्य गणमान्य उपस्थित रहेंगे। पांढुर्णा से निकलकर यात्रा सायं 04 बजे मुलताई पहुंचेगी।

समाधान योजना का बिजली उपभोक्ता उठा रहे लाभ, 8083 बकायादार उपभोक्ताओं ने कराया पंजीयन

251.29 लाख मूल राशि हुई जमा, 60.90 लाख का सरचार्ज हुआ माफ

बैतूल। जिले में बिजली उपभोक्ताओं को राहत प्रदान करने सरकार ने समाधान योजना शुरू की है। जिसमें बकाया राशि की वसूली के लिए एकमुश्त या किस्तों में भुगतान की सुविधा भी उपभोक्ताओं को दी है और उपभोक्ता इस योजना का लाभ भी ले रहे है। बैतूल वृत्त में पदस्थ महाप्रबंधक भूपेन्द्र सिंह बघेल ने बताया कि मध्यप्रदेश सरकार की समाधान योजना 2025-26 में अब तक 8083 बकायादार उपभोक्ताओं ने अपना पंजीयन कराया है। इन उपभोक्ताओं में मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के खाते में 251.29 लाख से अधिक की मूल राशि जमा हुई है, जबकि 60.90 लाख का सरचार्ज माफ किया गया है। विद्युत वितरण कंपनी के अनुसार जिले में 2 लाख 28 हजार 697 लाख उपभोक्ता हैं। इन पर करीब 95 करोड़ 54 लाख रुपये का बिजली बिल बकाया है। यदि बकायादार उपभोक्ता समाधान योजनांतर्गत समय पर बकाया राशि जमा करते हैं, तो कंपनी द्वारा सरचार्ज माफ किया जाएगा, इससे उपभोक्ताओं को राहत तो मिलेगी ही, साथ ही कंपनी को राजस्व सुदृढ़ करने में मदद मिलेगी। बताया जा रहा है कि समाधान योजना के प्रथम चरण में घरेलू व कृषि उपभोक्ताओं को एकमुश्त बकाया जमा करने पर 60 से लेकर 100 प्रतिशत सरचार्ज माफी देने का प्रावधान किया है।

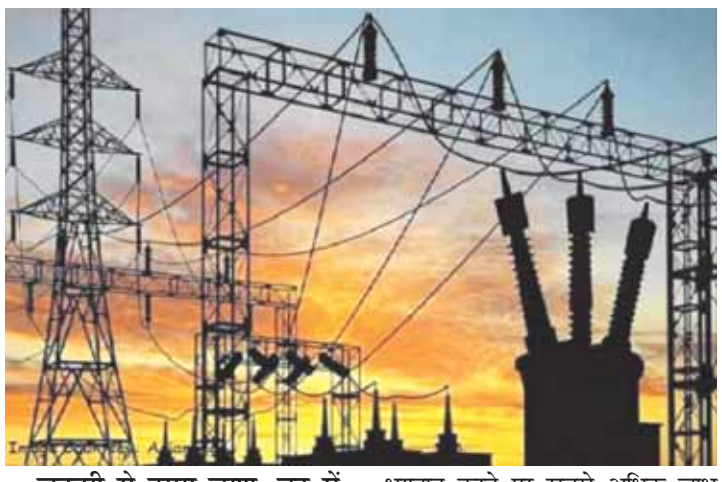

जनवरी से दूसरा चरण, छूट में आंशिक बदलाव- समाधान योजना 2025-26 का उद्देश्य 3 माह से अधिक अवधि के उपभोक्ताओं को बकाया विलंबित भुगतान के सरचार्ज पर छूट देना करना है। यह योजना जल्दी आएं, एकमुश्त भुगतान कर ज्यादा लाभ पाएं के सिद्धांत पर आधारित है। इस योजना में उपभोक्ता को प्रथम चरण में एकमुश्त भुगतान करने पर सबसे अधिक लाभ होगा, जबकि द्वितीय चरण के दौरान छूट का प्रतिशत क्रमशः कम होता जाएगा। यह योजना दो चरणों में प्रारंभ होकर प्रथम चरण की शुरुआत 3 नवंबर से 31 दिसंबर 2025 तक रहेगी, जिसमें 60 से लेकर 100 प्रतिशत तक सरचार्ज माफ किया जाएगा। इसी तरह द्वितीय और अंतिम चरण में, जो कि एक जनवरी से 28 फरवरी 2026 तक लागू रहेगी, इसमें 50 से 90 फ़ीसदी तक सरचार्ज माफ किया जाएगा। प्रथम चरण में एकमुश्त राशि जमा कराने पर अधिकतम लाभ होगा।

किस्तों में राशि जमा करने पर 70 प्रतिशत सरचार्ज माफ- जो उपभोक्ता एकमुश्त भुगतान नहीं कर सकते, उन्हें कंपनी ने किस्तों में राशि जमा करने की सुविधा दी है। ऐसी स्थिति में गैर-घरेलू एवं औद्योगिक उपभोक्ताओं को एकमुश्त भुगतान पर 70 प्रतिशत तथा किस्तों पर 50 प्रतिशत सरचार्ज छूट दी जाएगी। प्रथम चरण में अधिकतम छूट उपलब्ध है, इसलिए उपभोक्ताओं को इससे समय पर लाभ उठाना चाहिए। अधिकारियों के अनुसार योजना का उद्देश्य उपभोक्ताओं को बकाया चुकाने के लिए प्रेरित करना और जिले की बिजली आपूर्ति व्यवस्थित बनाए रखना है। कंपनी ने स्पष्ट किया है कि ये योजना सीमित अवधि के लिए है। इसलिए बकायादारों से आग्रह किया जा रहा है कि वे समय रहते बिलों का भुगतान कर योजना का फायदा उठाएं।

8083 बकायादार उपभोक्ताओं ने कराया पंजीयन

योजना के अंतर्गत 8083 बकायादार उपभोक्ताओं ने कराया पंजीयन कराया है। जिन्होंने 251.29 लाख मूल राशि जमा कर समाधान योजना अंतर्गत 60.90 लाख का सरचार्ज माफी का लाभ लिया है। बिजली विभाग ने उपभोक्ताओं से अपील की है कि वे प्रथम चरण में ही एकमुश्त भुगतान कर इस योजना में शामिल होकर सरचार्ज में अधिकतम छूट का लाभ उठाएं। यह योजना उन बकायादार उपभोक्ताओं के लिए वरदान बनी है, जो सरचार्ज के कारण मूलधन राशि जमा नहीं कर पा रहे थे। अब उन्हें समाधान योजना के प्रथम चरण में सरचार्ज में 60 से लेकर 100 प्रतिशत तक छूट के साथ एकमुश्त अथवा किस्तों में भुगतान करने का विकल्प मिल रहा है।

इन्होंने लिया योजना का लाभ

समाधान योजना के तहत 1 लाख से अधिक बकाया राशि वाले कृषि पंप उपभोक्ता सुप्रिया सिंह विपती निवासी-खेड़ली बाजार द्वारा बकाया राशि रू 2.01 लाख होने पर राशि 1.14 लाख सरचार्ज में छूट लेकर योजना में लाभ उठाया। इसी प्रकार चिरोंजीलाल रामा निवासी कल्याणपुर द्वारा राशि 0.70 लाख, तुलसी राम काशीराम निवासी- बोरगांव द्वारा राशि 0.80 लाख, ईठलराव धनजी निवासी-जीनढाना द्वारा राशि 084 लाख, मौजीलाल बाली निवासी बिघवा द्वारा राशि 0.71 लाख सरचार्ज में छुट पाकर योजना का लाभ उठाया। इस प्रकार 28 नं. उपभोक्ताओं द्वारा योजना का लाभ लिया। औद्योगिक उपभोक्ता मेसर्स इति बायोटेक द्वारा 8.07 लाख की राशि जमा कर बंद पड़ी यूनिट को चालू करवाया गया।

इनका कहना है -

जिले में 8083 बकायादार उपभोक्ताओं ने 251.29 लाख मूल राशि जमा की है, जिससे उन्हें योजना अंतर्गत 60.90 लाख का सरचार्ज माफ हुआ है। बकायादार उपभोक्ता योजना के प्रथम चरण में राशि जमा कर 60 से 100 प्रतिशत सरचार्ज माफी का लाभ ले सकते है।

- भूपेन्द्र सिंह बघेल,
महाप्रबंधक, बैतूल वृत विद्युत वितरण केन्द्र बैतूल

गीता केवल ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है

गीता जयंती पर संगोष्ठी संपन्न

बैतूल। शासकीय महाविद्यालय घोड़ाडोंगरी में मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद घोड़ाडोंगरी द्वारा गीता जयंती के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम प्रीति वर्धन चतुर्वेदी, प्रोफेसर हेमंत निरापुरे के आतिथ्य में और ब्लॉक समन्वयक संतोष राजपूत की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस मौके पर प्रीति वर्धन ने कहा कि श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कुरुक्षेत्र के रणक्षेत्र में भगवद्-गीता का दिव्य उपदेश दिया था कि तुम अपना कर्म करो फल की चिंता मत करो। उन्होंने वर्तमान परिपेक्ष में जिस तरह से जातिवाद एवं विघटित होने की जो मानसिकता आज समाज में है उसमें संगठित रहने की बात कही। प्रो.निरापुरे ने भी गीता जयंती का महत्व सत्य, धर्म और कर्तव्य का मार्ग दिखाती है।

मनुष्य को भय, दुख और मोह से निकालती है। जीवन में कर्म, भक्ति, ज्ञान और समता का संदेश देती है। संतोष राजपूत ने बताया कि गीता जयंती कार्यक्रम को मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने वृहद रूप दिया है जिससे गीता का संदेश अधिक से अधिक लोगों तक पहुंच रहा है। उन्होंने सभी सामाजिक कार्यकर्ताओं से आव्हान किया कि अपने-अपने प्रयोगशाला ग्राम में गीता जयंती का आयोजन करें एवं गीता का संदेश के संदेश को प्रचारित करें। कार्यक्रम का संचालन जतिन प्रजापति ने व आभार परामर्शदाता यशोमति भोरवंशी ने करते हुए कहा कि गीता कि जीवन के हर संकट में गीता हमारा मार्गदर्शन करती है।

सरकारी सिस्टम फेल, नेत्रहीन दंपत्ति पेड़ों के नीचे जिंदगी काटने मजबूर

बैतूल। यह सबसे बड़ा विडंबनापूर्ण सच है कि बैतूल जैसे आदिवासी बहुल जिले में, जहां हर मंच पर विकास और जनजातीय कल्याण की बातें होती हैं, वहीं एक नेत्रहीन आदिवासी दंपत्ति धाधु उइके और उसकी पत्नी सुशीला वर्षों से पेंशन, राशन और किसी भी सरकारी योजना से वंचित होकर जंगल में लकड़ी बेचकर पेट भरने को मजबूर हैं। योजनाओं के भारी-भरकम दावों के बावजूद इस परिवार तक राहत की एक किरण भी नहीं पहुंच सकी। यह सिर्फ गरीबी नहीं, यह उस सिस्टम की नाकामी है जो आदिवासियों के नाम पर योजनाएं बनाता है, पर एक नेत्रहीन दंपत्ति तक उनका हक पहुंचाने में भी नाकाम साबित होता है। जिले की ग्राम पंचायत सराड के जंगल में रह रहे नेत्रहीन धाधु उइके अपनी पत्नी सुशीला के सहारे ही जीवन की हर सांस पूरी कर पा रहा है, जबकि सुशीला खुद अपने पति पर ही निर्भर है। आदिवासी बहुल क्षेत्र में जनजातीय समुदाय

के लोगों को अब भी ऐसी कठिन परिस्थितियों में जीवन बिताना पड़ रहा है, जहां सहारा भी सहारे का मोहताज है। बैतूल के जनजातीय क्षेत्र की यह तस्वीर बताती है कि एक नेत्रहीन पति और उसका संघर्षरत जीवनसाथी कैसे एक-दूसरे को थामकर जीने की कोशिश कर रहे हैं। किसी तरह जंगल से लकड़ी बीनकर दो वक्त की रोटी जुटाने वाला यह परिवार योजनाओं और सरकारी दावों से दूर, मूलभूत अधिकारों के बिना जीवन काटने को मजबूर है।

मानवता की मिसाल बनी राष्ट्रीय हिन्दू सेना- जब सिस्टम ने आंखें मूंद लीं, तब राष्ट्रीय हिन्दू सेना ने मानवता की मिसाल पेश करते हुए परिवार तक पहुंचकर सहारा दिया। राष्ट्रीय हिन्दू सेना के पदाधिकारियों ने मानवता की मिसाल पेश करते हुए इस परिवार की व्यथा को सुना और तुरंत पहुंचकर मदद का हाथ बढ़ाया। जिला अध्यक्ष अनुज राठौर ने बताया कि जंगल में ऐसे कई परिवार हैं जिन्हें उनके अधिकार नहीं मिल रहे। प्रदेश अध्यक्ष दीपक मालवीय, प्रदेश संयोजक पवन मालवीय, प्रांत सह संगठन मंत्री शुभम इगले, जनपद पंचायत सदस्य अखिलेश वाघमारे, समाजसेवी गोलू उघड़े, रूपेश साहू, लिलाधर पटेल, सत्यम विश्वकर्मा और युगल नागले मौके पर पहुंचे और परिवार की दुर्बल हालात की जानकारी ली।

राष्ट्रीय जनजाति आयोग और कलेक्टर को लिखेंगे पत्र

राष्ट्रीय हिन्दू सेना ने घोषणा की है कि इस नेत्रहीन परिवार के हक के लिए अब लड़ाई लड़ी जाएगी। संगठन ने बताया कि वे राष्ट्रीय जनजाति आयोग को पत्र लिखकर पूरे मामले से अवगत कराएंगे और जिला कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी से मिलकर कार्रवाई की मांग करेंगे ताकि जिनके नाम काटे गए हैं, वे जिम्मेदार अधिकारी चिन्हित किए जाएं और परिवार को तुरंत योजनाओं का लाभ मिले। राष्ट्रीय हिन्दू सेना के प्रदेश अध्यक्ष दीपक मालवीय का कहना है कि जहां सरकार की योजनाएं कहती हैं कि नेत्रहीनों को पेंशन, अनाज और सुविधा मिलेगी, वहीं इस परिवार की थाली पिछले डेढ़ वर्ष से खाली है और उनका राशन कार्ड, आधार कार्ड, समग्र आईडी सब होने के बावजूद भी उन्हें उनका हक नहीं मिल रहा।

कैफे में टेबल पर रखी घंटी उठाकर बोले सिंधिया

पन्नालाल जी यह घंटी मैं आपको नहीं दूंगा, न जाने किसकी घंटी बजा दोगे आप

गुना (नप्र)। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने शनिवार को गुना में 'जिज्जी की पंचायत रेस्त्रोमार्ट' का उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होंने विधायक पन्नालाल शाक्य के साथ हल्के-फुल्के अंदाज में मजाक किया। कैफे में टेबल पर रखी सर्विस बेल (घंटी) को उठाकर सिंधिया ने विधायक से कहा- पन्नालाल जी यह घंटी मैं आपको नहीं दूंगा। न जाने किसकी घंटी बजा दोगे आप। सिंधिया के इस अंदाज पर वहां मौजूद सभी लोग हंस पड़े।

इससे पहले कैफे का अवलोकन करते समय सिंधिया को एक टेबल पर पुराने जमाने का एंटीक टेलीफोन दिखा। उन्होंने फोन उठाकर कान से लगाया और एक्टिंग करते हुए कहा- हेलो, पन्नालाल जी हैं क्या? हां, पन्नालाल जी आज किसकी बारी है? किसकी बारी है? ओह हो... मेरी बारी है। मेरा ध्यान रखना पन्नालाल जी। बता दें कि केंद्रीय मंत्री ने सबसे पहले फीता काटकर जिज्जी की पंचायत रेस्त्रोमार्ट का लोकार्पण किया।

यहां बने एक बड़े लूडो पर उन्होंने के साथ लूडो खेला। इसके बाद जिला पंचायत अध्यक्ष अरविंद धाकड़ के साथ टेबल टेनिस पर हाथ आजमाया। साथ ही कैफे के बाहर बने प्लेइंग एरिया में बने क्रिकेट ग्राउंड पर बैट थामकर बैटिंग की।

विधायक बोले- डेयरी पर गया था, मक्खन नहीं मिला- शनिवार को ही एक अन्य कार्यक्रम (अमृत 2.0 योजना भूमिपूजन) में विधायक पन्नालाल शाक्य ने अपने संबोधन में कहा, मैं कल दूध डेयरी पर गया था। उससे कहा कि तेरे पास एक कनस्तर मक्खन हो तो दे दे यार। अब उसके पास मक्खन मिला ही नहीं तो मैं क्या करूं भैया। अब मैं कुछ कर भी नहीं सकता। तीन दिवसीय दौरे के दौरान गुरुवार को भी विधायक और सिंधिया के बीच संवाद चर्चा में रहा था। सिंगवासा में एक कार्यक्रम में विधायक ने सिंधिया के सामने कहा था, मैं बाहर धूप में खड़ा था। कुछ लोग बोले कि बैठ जाइए। मैंने कहा कि अभी लोकसभा का चुनाव दूर है, अभी नहीं बैठते।

मोहन यादव आज करेंगे अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव का शुभारंभ

इंदौर में होगा मध्यप्रदेश के पहले गीता भवन का लोकार्पण

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव गीता जयंती 1 दिसंबर को अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का शुभारंभ करेंगे। इस अवसर पर मध्यप्रदेश के 313 विकासखंड, 55 जिला मुख्यालय तथा 10 संभागों में श्रीकृष्ण परंपरा के आचार्यों की सन्निधि में 3 लाख से अधिक गीताभक्तों द्वारा भगवान श्रीकृष्ण द्वारा प्रदत्त श्रीमद्भगवद्गीता के 15वें अध्याय का सामूहिक सस्वर पाठ किया जायेगा। इस मौके पर विशेष आयोजन उज्जैन, भोपाल एवं इंदौर में आयोजित किये गये हैं। जिसमें इंदौर के राजवाड़ा स्थित गोपाल मंदिर में मध्यप्रदेश के पहले गीता भवन का लोकार्पण मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की उपस्थिति में होगा। इस अवसर पर प्रदेश में 16 से 28 नवंबर तक आयोजित श्रीमद्भगवद्गीता ज्ञान प्रतियोगिता के विजेताओं के नामों की घोषणा की जायेगी।

मुख्यमंत्री के संस्कृति सलाहकार एवं वीर भारत न्यास के न्यासी सचिव श्रीराम तिवारी ने बताया कि अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव न केवल

आध्यात्मिक उत्कर्ष का प्रतीक है, बल्कि सांस्कृतिक जागरण का भी व्यापक साधन होगा। उन्होंने कहा कि गीता केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं बल्कि जीवन जीने की कला सिखाती है।

उज्जैन में तीन दिवसीय भव्य आयोजन- संस्कृति सलाहकार ने बताया कि उज्जैन के दशहरा मैदान पर 1 से 3 दिसंबर सांस्कृतिक आयोजन किये जा रहे हैं। जिसमें पहले दिन अभिनेता पुनीत इस्सर द्वारा निर्देशित नृत्य नाटिका जय श्रीकृष्णा का मंचन होगा। दूसरे दिन नई दिल्ली की वैष्णवी शर्मा का काव्यपाठ विराटजयी तथा मुंबई के मोहित शेवानी एवं दल द्वारा कृष्णायन की सांगीतिक प्रस्तुति होगी। अंतिम दिन उमेश तरकसवार द्वारा निर्देशित विश्ववंदनीय एवं बैंगलोर के डॉ. सलाउद्दीन पाशा द्वारा निर्देशित गीता ऑन व्हील्स की प्रस्तुति होगी। इस अवसर पर लघु चित्र शैली में माधव दर्शनम् प्रदर्शनी को प्रदर्शित किया जा रहा है।

इंदौर के गोपाल मंदिर में होंगे आयोजन: तिवारी ने कहा कि गीता जयंती पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव इंदौर के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि होंगे। वे मध्यप्रदेश के पहले गीता भवन-गोपाल मंदिर का लोकार्पण करेंगे तथा मध्यप्रदेश में 16 से 28 नवंबर 2025 तक आयोजित हुई श्रीमद्भगवद्गीता ज्ञान प्रतियोगिता के विजेताओं के नामों की घोषणा की जायेगी। पुरस्कार वितरण 26 जनवरी को होगा। इस अवसर पर संजीव मालवीय निर्देशित नृत्य नाटिका कृष्णायन की प्रस्तुति होगी।

भोपाल में कलाकारों द्वारा गीता ऑन व्हील्स का मंचन

भोपाल के रवीन्द्र भवन के हंसध्वनि सभागार मोहित शेवानी के निर्देशन में कृष्णायन की प्रस्तुति होगी। यह प्रस्तुति भगवान श्रीकृष्ण और मध्यप्रदेश की कहानी पर केंद्रित है। इसके पूर्व बैंगलोर के डॉ. सलाउद्दीन पाशा के निर्देशन में गीता ऑन व्हील्स जिसमें दिव्यांग कलाकार गीता के प्रसंगों को मंचित करेंगे तथा विश्व गीता प्रतिष्ठानम् की ओर से श्रीमद्भगवद्गीता नृत्य नाटिका की प्रस्तुति होगी। इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्रीजी डॉ. मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में दोपहर 1 बजे श्रीमद्भगवद्गीता के 15वें अध्याय का सस्वर पाठ एवं प्रदर्शनी का लोकार्पण होगा। प्रस्तुतियाँ शाम 6 बजे शुरू होंगी।

भोपाल में दो कार टकराईं, 4 की मौत, एक घायल

हादसे में एक गाड़ी के परखच्चे उड़े, सभी लोग श्योपुर के रहने वाले थे

श्योपुर/ भोपाल (नप्र)। भोपाल में शनिवार देर रात भीषण सड़क हादसे में श्योपुर के चार लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल है।

हादसा रात लगभग 10 बजे बैरसिया के पास हुआ। पांच लोग एक अर्टिगा कार से भोपाल से श्योपुर लौट रहे थे। रास्ते में उनकी कार सामने से आ रही एक अन्य तेज रफ्तार कार से टकरा गई।

टक्कर इतनी भीषण थी कि अर्टिगा कार का अगला हिस्सा बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। हादसे में कार सवार चार लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। अभी दूसरी कार के बारे में जानकारी नहीं मिली है।

इनकी हुई मौत

मौलाना अनीस साहब (बालापुरा, श्योपुर)
खालिद भाई (बगवाज, श्योपुर)
साज़िद भाई (बगवाज, श्योपुर)
नावेद भाई (किला श्योपुर)

मौलाना अनीस मदरसा चलाते थे, नावेद ट्रैफिक पुलिस में वार्डन थे- हादसे में कार में सवार रफाकत गौरी उर्फ किंग (बालापुरा) गंभीर रूप से घायल हैं। उन्हें तत्काल बैरसिया स्थित अस्पताल ले जाया गया, जहां उनका इलाज जारी है। मौलाना अनीस मदरसा चलाते थे, नावेद पहले ट्रैफिक पुलिस में वार्डन थे। बाद में किराए की गाड़ी चलाने लगे। इनकी ही एर्टिगा से सभी लोग भोपाल से लौट रहे थे।साजिद बगवाज में खेती करते थे। उनके दो बेटे और एक बेटी हैं। खालिद भी खेती करते थे।

मौलाना महमूद मदनी की तकरीर में शामिल होने आए थे- सड़क हादसे में जान गंवाने वाले चारों व्यक्ति परवलिया स्थित मौलाना महमूद मदनी के जलसे में शामिल होने आए थे। उनकी तकरीर सुनने के बाद रात का खाना भी वहीं खाया। इसके बाद श्योपुर के लिए रवाना हुए। बैरसिया-नजीराबाद रोड पर भोपाल से करीब 60 किलोमीटर दूर हादसा हुआ।

भोपाल के रविंद्र भवन में 'विश्व रंग 2025' का समापन

साहित्य-कला महोत्सव में जुटीं कई हस्तियां, अंतिम दिन सोना महापात्रा की शानदार प्रस्तुति

भोपाल (नप्र)। भोपाल के रविंद्र भवन में शनिवार शाम टैगोर अंतर्राष्ट्रीय साहित्य और कला महोत्सव 'विश्वरंग 2025' का समापन हुआ। 3 दिवसीय इस उत्सव में दिव्या दत्ता, स्वानंद किरकिरे, दिव्या प्रकाश दुबे, नीलोत्पल मृणाल, सोना मोहपात्रा, देवदत्त पटनायक और सौरभ द्विवेदी जैसे देश के कई साहित्यकार, कलाकार और सिनेमा जगत के सितारे शामिल हुए।

कार्यक्रम के दूसरे दिन मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव भी यहां पहुंचे। हर दिन अलग अलग हस्तियों के विभिन्न विषयों पर वैचारिक सत्र आयोजित किये गए और शामें कलात्मक कार्यक्रमों से सजाई गई।

नौ साल में बनाई अपनी जगह- 2019 में रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय ने एक वैश्विक मंच के रूप में विश्वरंग को शुरू किया था। जहां भारतीय साहित्य, संस्कृति, कला, संगीत और सिनेमा की प्रस्तुतियों का उत्सव मनाया जाता है। यह भारतीय संस्कृति को पूरी दुनिया में बढ़ावा देने और प्रसार करने वाले उत्सवों में से एक है। इस साल विश्वारंग का यह 7 वां संस्करण था।

अंतिम दिन बॉलीवुड सिंगर महापात्रा ने दी प्रस्तुति- शनिवार को अंतिम दिन बॉलीवुड सिंगर सोना महापात्र के गानों से कार्यक्रम का समापन हुआ। वे शाम 8:45 पर स्टेज पर आई, उन्होंने बेखौफ, पिया से नैना, रुपैया, धीमे धीमे चले पुरवैया जैसे मशहूर गाने गए। उन्होंने स्टेज पर रैप

करने का प्रयास भी किया। प्रस्तुति के दौरान उन्होंने अपना अनुभव साझा करते हुए बताया कि कैसे मी टू आंदोलन के समय उन्हें एक रियलिटी शो की जज की कुर्सी से हटाया गया और 'कंट्रोवर्शियल' कहकर निशाना बनाया गया।

सोना ने कार्यक्रम में मध्य प्रदेश की कुछ महिलाओं का जिक्र किया जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई और भोपाल में बेगमों के शासन को नारी शक्ति कि मिसाल बताया।

भोपाल में सोशल मीडिया फ्रेंड ने किया महिला से रेप

तबीयत खराब होने का बहाना कर घर रुका, डरा-धमकाकर की ज्यादती

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोहेफिजा इलाके में इंस्टाग्राम पर दोस्ती के बाद युवक ने महिला से रेप किया। बाद में शिकायत न करने के एवज में शादी करने की बात कही। अब आरोपी शादी करने से साफ मुकर गया है। पीड़िता ने थाने पहुंचकर एफआईआर दर्ज कराई। आरोपी युवक की फिलहाल गिरफ्तारी नहीं की जा सकी है। पुलिस के मुताबिक 30 वर्षीय पीड़िता राजीव नगर में रहती है और शेयर ट्रेडिंग का काम करती है।

दो साल पहले इंस्टाग्राम पर उसकी दोस्ती स्वप्निल जैन नाम के युवक से हुई। आरोपी ने 30 अक्टूबर 2023 को पीड़िता को मिलने के लिए बुलाया। मुलाकात के बाद दोनों ने एक रेस्टोरेंट में साथ डिनर किया। बाद में आरोपी ने महिला को ड्रॉप करने की बात कही। पीड़िता उसके साथ अपने घर तक आई। यहां आने के बाद आरोपी ने घबराहट होने और तबीयत बिगड़ने की बात कही। यही बहाना बनाकर पीड़िता के घर में रुक गया।

पीड़िता के घर में ही की ज्यादती

जहां उसने देर रात महिला के साथ डरा धमकाकर रेप किया। बाद में बदनाम करने की धमकी देकर कई बार अलग-अलग स्थानों पर ले जाकर महिला से ज्यादती की। पीड़िता ने पुलिस में शिकायत करने की बात कही तो आरोपी ने उससे शादी करने का भरोसा दिलाया। आरोपी ने महिला से हर तरह का संबंध खत्म कर दिया है। तब पीड़िता ने शनिवार रात एफआईआर दर्ज करा दी।

प्रदेश में उत्तम शिक्षा एवं कौशल विकास के केन्द्र बन रहे हैं सांदीपनि विद्यालय : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में नई शिक्षा नीति वर्ष 2020 के अनुरूप स्कूल शिक्षा में गुणवत्ता सुधार के लिये राज्य सरकार लगातार प्रयास कर रही है। प्रदेश के सांदीपनि विद्यालयों ने अपनी उच्च गुणवत्ता के कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई है। सांदीपनि विद्यालयों के माध्यम से बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिये जाने के साथ ही उनके कौशल विकास और उन्हें रोजगार से जोड़ने पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

राज्य में सांदीपनि विद्यालय की शुरूआत वर्ष 2022-23 शैक्षणिक सत्र से प्रारंभ हुई। इस सत्र में प्रथम चरण में प्रदेश में 274 सांदीपनि विद्यालय शुरू किये गये। इन विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों की संख्या 3 लाख से ऊपर हो गयी है। विद्यालय में केजी-वन से कक्षा 12वीं तक के विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान की जा रही है। वर्ष 2024-25 में कक्षा 10वीं का परीक्षा परिणाम 88 प्रतिशत और कक्षा 12वीं का परीक्षा परिणाम 84 प्रतिशत तक रहा है।

उत्कृष्ट अधोसंरचना- स्कूल शिक्षा विभाग ने सांदीपनि विद्यालयों में अधोसंरचना के विस्तार को प्राथमिकता दी है। राज्य में 256 सांदीपनि विद्यालय भवनों के निर्माण का कार्य प्रारंभ किया गया। विद्यालयों के भवन निर्माण एवं संसाधनों की सुविधा के लिये स्कूल शिक्षा विभाग ने लगभग 10 हजार करोड़ रूपये की कार्ययोजना तैयार की है।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य महकमे में उलटफेर

सरकार ने कमिश्नर हेल्थ डॉ. प्रियंका शुक्ला और कमिश्नर मेडिकल एजुकेशन शिखा राजपूत तिवारी को दूसरे विभागों में भेजकर स्वास्थ्य विभाग में बड़ा उलटफेर कर दिया। चर्चा है कि 2008 बैच की आईएएस शिखा राजपूत तिवारी की कार्यशैली से कई मेडिकल कालेज के डीन असहज महसूस कर रहे थे और पटरी नहीं बैठ पा रही थी। 2008 बैच की आईएएस शिखा राजपूत तिवारी को सरकार ने राज्य निर्वाचन आयोग का सचिव बना दिया है। बिलासपुर और सरगुजा संभाग की कमिश्नर रही शिखा राजपूत तिवारी के लिए राज्य निर्वाचन आयोग के सचिव के पद पर पोस्टिंग को पनिशमेंट माना जा रहा है, क्योंकि राज्य निर्वाचन आयोग में अभी ऐसा कोई इवेंट नहीं होना है, जिसके लिए वहां कोई सीनियर आईएएस की जरुरत पड़े। राज्य निर्वाचन में शिखा की पोस्टिंग के मायने तलाशे जा रहे हैं और तरह-तरह का कयास भी लगाया जा रहा है। शिखा अतिरिक्त मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी भी रह चुकी हैं। उनके पास अभी कमिश्नर मेडिकल एजुकेशन के साथ आयुक्त आयुष का भी एडिशनल चार्ज था। विष्णुदेव साय की सरकार ने शिखा को फारेस्ट सेक्रेटरी के पद से हटाकर हेल्थ में भेजा था। सरकार ने कुछ दिनों पहले मेडिकल एजुकेशन के एडिशनल डायरेक्टर के पद से डॉ पुनीत गुप्ता को भी हटा दिया था। डॉ. पुनीत गुप्ता भूपेश बघेल के राज में सरकार के निशाने पर थे। डॉ. पुनीत गुप्ता को रायपुर मेडिकल कालेज में अटैच कर दिया गया है। खबर है कि 2009 बैच की आईएएस कमिश्नर हेल्थ डॉ प्रियंका शुक्ला और स्वास्थ्य मंत्री श्यामबिहारी जायसवाल का तालमेल ठीक नहीं चल रहा था। डॉ. प्रियंका शुक्ला के पास हेल्थ में दो चार्ज था, उसके बदले उन्हें आयुक्त समग्र शिक्षा और प्रबंध संचालक पाठ्य पुस्तक निगम बना दिया गया है। सरकार ने आईएएस संजीव कुमार झा और संतन देवी जांगड़े को हेल्थ विभाग में लाने के साथ स्वास्थ्य विभाग में रितेश अग्रवाल की जिम्मेदारी बढ़ाई है। अब देखते हैं स्वास्थ्य महकमे में कितना सुधार होता है।

भाजपा की महिला नेत्री को खरी-खरी

कहते हैं कि पिछले दिनों भाजपा के एक कार्यक्रम में संगठन के एक पदाधिकारी ने महिला नेत्री को खरी-खरी बात कह दी। संगठन के पदाधिकारी की बात से मंच में सन्नाटा छा गया और लोग औचक रह गए। खबर है कि भाजपा नेत्री राजधानी के पड़ोसी जिले के एक विधानसभा से पिछले चुनाव लड़ी थी और कुछ सौ वोटों से चुनाव हार गईं। इस समय वे प्रदेश भाजपा में पदाधिकारी हैं। बताते हैं संगठन के पदाधिकारी ने महिला नेत्री से सख्त लहजे में कह दिया कि लोगों से मिलते-जुलते रहती और सक्रिय रहती तो चुनाव नहीं हारती और आज महिला एवं बाल विकास मंत्री रहतीं। हिदायत देने वाले संगठन के बड़े पदाधिकारी थे, तो उनके सामने महिला नेत्री का मुँह नहीं खुला और ना ही दूसरे कुछ कह पाए, पर बात कइयों को घायल कर गई।

रायपुर में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष की पसंद फेल

कहते हैं कि प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज सुबोध हरितवाल को रायपुर शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष बनवाना चाहते थे, पर ऐसा नहीं हो पाया। श्रीकुमार मेनन की लाटरी लग गई और वे रायपुर शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष बन गए। बताते हैं कि श्रीकुमार मेनन का बायोडाटा तो मजबूत था ही,केरल कनेक्शन भी काम आ गया। चर्चा है कि श्रीकुमार मेनन को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महामंत्री के सी वेणुगोपाल का भी आशीर्वाद मिल गया। खबर है कि अलग-अलग वार्ड से तीन बार पार्षद रहे मेनन के लिए पूर्व मंत्री और पार्टी के वरिष्ठ नेता सत्यनारायण शर्मा ने भी दांव चला। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष से लेकर दूसरे बड़े नेता अपने-अपने इलाकों में अपनी पसंद के लोगों को जिला अध्यक्ष बनवाने में तो कामयाब रहे, पर क्षेत्र से बाहर हाईकमान ने अपनी चलाई। टीएस सिंहदेव अंबिकापुर में बालकृष्ण पाठक को फिर से जिला अध्यक्ष बनवाने में कामयाब रहे, पर बलरामपुर में केपी सिंह को नहीं बनवा पाए। बताते हैं रायशुमारी में ही केपी सिंह का विरोध हो गया था। सूरजपुर की जिला अध्यक्ष बनी शशि सिंह को भले टीएस सिंहदेव का समर्थन था, पर वह जिला अध्यक्ष बनी है राहुल गाँधी की टीम की सदस्य होने के कारण। नेता प्रतिपक्ष डॉ चरणदास महंत अपने विधानसभा क्षेत्र सक्ती में रश्मि गभेल को जिला अध्यक्ष बनवाने में सफल रहे। कोंडागांव में पूर्व प्रदेश अध्यक्ष मोहन मरकाम के खासमखास रवि घोष जिला अध्यक्ष बने हैं। मोहन मरकाम के कार्यकाल में रवि घोष प्रदेश कांग्रेस के महामंत्री संगठन थे। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के गृह जिले दुर्ग में धीरज बाकलीवाल शहर जिला अध्यक्ष बने हैं। धीरज बाकलीवाल दुर्ग के महापौर रहे हैं। कभी वोरा समर्थक रहे धीरज बाकलीवाल अब भूपेश बघेल के पाले में बताए जाते हैं। दुर्ग ग्रामीण के अध्यक्ष बने राकेश ठाकुर और भिलाई शहर के अध्यक्ष मुकेश चंद्राकर भी भूपेश बघेल के कोटे से माने जा रहे हैं।

मंत्री के विशेष सहायक का हटना चर्चा में

वैसे तो मंत्री के स्टाफ में किसी का हटना और आना रुटीन प्रक्रिया है। लेकिन राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा के विशेष सहायक दुर्गेश कुमार वर्मा का हटना चर्चा का विषय बन गया है। दुर्गेश वर्मा का हटना राजनीति के साथ प्रशासनिक महकमे में भी सुर्खियों में है। दुर्गेश वर्मा डिप्टी कलेक्टर हैं। बताया जाता है दुर्गेश वर्मा बलौदाबाजार जिले के ही रहने वाले हैं। मंत्री टंकराम वर्मा बलौदाबाजार से विधायक हैं। खबर है कि विशेष सहायक दुर्गेश कुमार वर्मा मंत्री जी के राइट हैंड थे। कुछ लोग दुर्गेश वर्मा को मंत्री जी का रिश्तेदार भी बता रहे हैं। डिप्टी कलेक्टर होने के कारण दुर्गेश वर्मा राजस्व का काम देखते थे।

मंत्रियों का निज सहायक प्रेम

बताते हैं कि एक मंत्री जी गंभीर शिकायतों के बाद भी अपने निज सहायक को हटाना नहीं चाहते ,तो एक मंत्री जी अपने पुराने ड्राइवर से निज सहायक का काम ले रहे हैं। मजेदार बात है कि दोनों नेता पहली बार विधायक और मंत्री बने हैं। खबर है कि गंभीर शिकायत वाले निज सहायक मंत्री जी के आँख और कान है। मंत्री जी के प्रतिनिधि के तौर बड़ी-बड़ी कंपनियों से बातचीत और डीलिंग निज सहायक ही करते हैं। सुनने में आ रहा है कि निज सहायक अफसरों की पोस्टिंग में भी ख़ासा दखल रखते हैं। चर्चा है कि निज सहायक लिखने-पढ़ने वाले के तौर पर मंत्री जी से जुड़े और देखते ही देखते मंत्री जी का अति विश्वासपात्र बन गए। मंत्री जी और निज सहायक एक ही इलाके के बताए जाते हैं। ड्राइवर को निज सहायक के रूप में रखने वाले मंत्री जी को सरकारी आदेश की चिंता नहीं है। मंत्री जी भाजपा में आने से पहले कांग्रेस में थे। बताते हैं भाजपा में उनके कोई विश्वासपात्र नहीं बन पाए हैं, इसलिए सालों से गाड़ी चलाने वाले पर भरोसा करना उनकी मजबूरी है। अब मंत्री के रूप में मिले विभागों की गाड़ी भी तो चलानी पड़ेगी।

केदार से क्यों हटा सिंचाई विभाग?

मंत्रिमडल के विस्तार और विभागों के नए सिरे से बंटवारे में केदार कश्यप से जल संसाधन विभाग ले लिया। बदले में परिवहन विभाग दिया गया, पर जल संसाधन विभाग क्यों हटा, यह अब भी चर्चा का विषय है। कुछ लोग कह रहे हैं कि केदार कश्यप ने जल संसाधन विभाग को खुद चलाने की जगह अपने एक मातहत के भरोसे छोड़ दिया था। बताते हैं केदार कश्यप ने बस्तर के विकास के लिए कई सिंचाई परियोजनाएं बनवाए थे। कुछ उनमें से पाइप लाइन में आ चुकी हैं, पर उनके विभाग के जाने से उन पर ग्रहण भी लगना शुरू हो गया है। कहते हैं आजादी के बाद पहली दफे बस्तर के किसी नेता को जल संसाधन विभाग मिला था। पर साल -सवा साल बाद सिंचाई में बस्तर का नेतृत्व चला गया। सिंचाई के मामले में बस्तर को बड़ा संवेदनशील इलाका माना जा रहा है। आने वाले सालों में इस इलाके में बोधघाट परियोजना को अमलीजामा पहनाए जाने की उम्मीद है, तो बस्तर में ओड़िशा और आंध्रप्रदेश के साथ जल विवाद भी कभी-कभी चर्चा में आ जाता है। अब जल संसाधन विभाग को मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने अपने पास रखा है। इस विभाग को वे किस तरह चलाते हैं और सिंचाई परियोजनाओं को मूर्त रूप किस तरह देते हैं, यह समय बताएगा। पर सिंचाई विभाग अभी मुखिया के संकट से जूझ रहा है। वर्तमान मुखिया (प्रमुख अभियंता) इंद्रजीत उइके संविदा पर चल रहे हैं। उनके बाद के एक दावेदार रिटायर हो गए और दूसरे रिटायर होने वाले हैं। फिर दौड़ में कोई नहीं है।

कलेक्टर से दुखी उद्योगपति

कहते हैं छत्तीसगढ़ के एक जिला कलेक्टर से उद्योगपति बड़े दुखी हैं। यह जिला राजधानी से सटा है। कुछ उद्योगपति राज्य सरकार के एक आला अफसर से मिलकर कलेक्टर की शिकायत भी की,पर उद्योगपतियों की समस्या का अब तक समाधान नहीं हुआ है। अब छह फ़रवरी के बाद उद्योगपतियों की इच्छा पूरी हो तो हो। कहा जा रहा है कि एसआईआर के चलते राज्य में कलेक्टरों के ट्रांसफर छह फ़रवरी तक तो नहीं होने हैं। चर्चा है कि कलेक्टर साहब सेवा भी लेते हैं और गुर्राते भी हैं। बताते हैं कलेक्टर साहब फैक्टरियों के मालिकों को भी नहीं बख्शते हैं। उद्योगपति इस बात से दुखी हैं कि कलेक्टर साहब उनसे ठीक से पेश नहीं आते।

रायपुर में डीजीपी कांफ्रेंस से छत्तीसगढ़ का बढ़ा मान

राज्य बनने के बाद पहली बार छत्तीसगढ़ को डीजीपी कांफ्रेंस की मेजबानी का मौका मिला। इस कांफ्रेंस से देश में छत्तीसगढ़ चर्चा में आ गया और छत्तीसगढ़ का मान भी बढ़ा। छत्तीसगढ़ इस साल रजत जयंती भी मना रहा है। रजत जयंती वर्ष में राज्य की राजधानी में राष्ट्रीय स्तर के आयोजन और प्रधानमंत्री की तीन दिन तक राज्य में मौजूदगी प्रदेश के महत्व को रेखांकित करता है। छत्तीसगढ़ को नक्सल समस्या विरासत मिली थी। इसके कारण राज्य के बाहर छत्तीसगढ़ की छवि अच्छी नहीं बन पा रही थी। अब राज्य से नक्सलवाद का सफाया होने लगा है। बड़े नक्सली नेता सरेंडर कर रहे हैं या मारे जा रहे हैं। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मार्च 2026 तक राज्य से नक्सलियों के खात्मे का टारगेट तय किया है। डीजीपी कांफ्रेंस में नक्सलवाद के साथ आंतरिक सुरक्षा,आतंकवाद, तस्करी और अन्य मुद्दों पर भी चर्चा कर रणनीति बनाई जाएगी। डीजीपी कांफ्रेंस में जो भी प्रस्ताव पारित किया जाएगा और रणनीति बनाई जाएगी, उसे रायपुर की बैठक के नाम से ही जाना जाएगा। इसलिए आने वाले वर्षों तक देश की पुलिस और पैरा मिलिट्री फ़ोर्स के लिए रायपुर महत्व रखेगा।

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री
डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री
॥ गीता जयन्ती ॥
अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव
मुख्यमंत्री
डॉ. मोहन यादव
के आह्वान पर
प्रदेश के 313 विकासखंड, 55 जिला मुख्यालय एवं 10 संभाग
श्रीकृष्ण परंपरा के आचार्यों की सन्निधि में 3 लाख से अधिक गीताप्रेमी श्रीमद्भगवद्गीता के 15वें अध्याय का सस्वर पाठ करेंगे
उज्जैन- प्रातः 9 बजे | इंदौर सहित सभी जिला मुख्यालय, विकासखण्ड- प्रातः 11 बजे | भोपाल- दोपहर 1 बजे
1 से 3 दिसंबर 2025
दशहरा मैदान, उज्जैन
1 दिसंबर 2025 | सायं : 7 बजे
जय श्रीकृष्णा - नृत्य नाट्य
निर्देशन - पुनीत इस्सर, मुम्बई
2 दिसंबर 2025 | सायं : 7 बजे
विराटजयी - काव्य प्रस्तुति
वैष्णवी शर्मा, नई दिल्ली
कृष्णायन
कथाकार : मोहित शेवानी, मुंबई
3 दिसंबर 2025 | सायं : 7 बजे
विश्ववंदनीय
संगीत एवं निर्देशन : उमेश तरकसवार
परिकल्पना एवं आलेखन - डॉ. वीनस तरकसवार
नृत्य संरचना - श्वेता देवेन्द्र, भरतनाट्यम
क्षमा मालवीय, कथक
कविता शाजी, मोहिनीअट्टम
गीता ऑन व्हील्स
निर्देशन : डॉ. सलाउद्दीन पाशा, बैंगलोर
प्रदर्शनी
माधव दर्शनम्
लघुचित्र शैली में प्रदर्शनी
1 दिसंबर 2025, इंदौर
सायं : 6 बजे
लोकार्पण
गीता भवन - गोपाल मंदिर
राजवाड़ा, इंदौर
मुख्य अतिथि
नायब सिंह सैनी
मुख्यमंत्री, हरियाणा
अध्यक्षता
डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश
कृष्णायन - नृत्य नाटिका
निर्देशन -संजीव मालवीय, उज्जैन
1 दिसंबर 2025
हंसध्वनि सभागार, भोपाल | सायं : 6 बजे
गीता ऑन व्हील्स
निर्देशन : डॉ. सलाउद्दीन पाशा, बैंगलोर
श्रीमद्भगवद्गीता- नृत्य नाटिका
विश्व गीता प्रतिष्ठानम्
कृष्णायन
कथाकार : मोहित शेवानी, मुंबई
24 नवंबर से 5 दिसंबर 2025
कुरुक्षेत्र, हरियाणा
जय श्रीकृष्णा - नृत्य नाट्य
निर्देशन - पुनीत इस्सर, मुम्बई
श्रीकृष्ण - नृत्य नाट्य
निर्देशन -रचना मिश्रा, भोपाल
श्रीकृष्ण लीला
निर्देशन -शिरीष राजपुरोहित, उज्जैन
कृष्णायन
कथाकार : मोहित शेवानी, मुंबई
चित्र प्रदर्शनी
श्रीमद्भागवतपुराण एवं मध्यप्रदेश में श्रीकृष्ण
शिल्प मेला
मध्यप्रदेश के पारंपरिक विविध माध्यमों के शिल्प
स्वाद
मध्यप्रदेश के जनजातीय और
लोकांचलों के देशज व्यंजन
वीर भारत न्यास
मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग का आयोजन
सीधा प्रसारण
@Cmmadhyapradesh
@jansampark.madhyapradesh
@Cmmadhypradesh
@jansamparkMP
JansamparkMP
D-11151/25